सपना

भारतीय
प्रौढ़ शिक्षा
संघ
प्रकाशन

सपना

अ० अ० अनन्त

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110002

ग्रन्थांक 128
@ भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : मूल्य : 4.00
संस्करण 1985

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

यह नया संस्करण—

इस पुस्तक का यह नया संशोधित-परिवर्द्धित सस्करण आपके हाथों में है। किसी भी पुस्तक का पुनर्मुद्रण उस पुस्तक की लोकप्रियता का एक अकाट प्रमाण तो माना ही जाता है, साथ ही संतोष और प्रसन्नता की भी बात होती है। जाहिर है, ये बातें इस पुस्तक के साथ भी लागू होती हैं। कहा जा सकता है कि 'प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' की भी यह एक बड़ी उपलब्धि है।

हम अपने उन नवसाक्षर पाठकों के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने इस उपयोगी पुस्तक को पूरी रुचि के साथ पढ़ा और इससे उन्हें बहुत-कुछ सीखने-समझने में मदद भी मिली। विश्वास है, पुस्तक के इस नये संस्करण के साथ यह सिलसिला और ज्यादा तेजी से आगे बढ़ेगा।

शुभकामनाओं के साथ—

— जे० सी० सक्सेना
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

1 अगस्त, 1985

प्रस्तावना

प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में साक्षर बन जाना कोई इतना कठिन कार्य नहीं, जितना कठिन कार्य उस साक्षरता के ज्ञान को बनाये रखना है। साक्षरता के साथ अपने आप को जोड़े रखने के लिए नवसाक्षरों को अपनी रुचि के अनुसार साहित्य नहीं मिलता। नतीजा यह निकलता है कि वे लोग प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में जो कुछ सीख कर आते हैं, अनुवर्ती साहित्य के अभाव के कारण, सब कुछ भूल जाते हैं। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ इस दिशा में पहले से ही प्रयास करता आ रहा है। पिछले वर्ष इसने नव-साक्षरों के लिए दस पुस्तकें प्रकाशित की थीं। इस वर्ष भी भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ इसी साहित्य-माला के अन्तर्गत पांच पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है, जो उसके पहले प्रयास की दूसरी कड़ी है। यह प्रयास इस प्रकार के साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिए एक ठोस कदम है। इन पांचों पुस्तकों में लेखकों ने जीवन की समस्याओं को अपनी सरल भाषा में प्रकट किया है। इन्हें पढ़कर नवसाक्षरों में न केवल अक्षर-ज्ञान को बराबर बनाये रखने की भावना बनी रहेगी, बल्कि अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाने और सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना को ग्रहण करने का भी उनमें उत्साह पैदा होगा। अतः ये पांचों रोचक रचनाएं नवसाक्षर भाई-बहनों का मन तो बहलायेंगी ही, साथ ही उनके जीवन के व्यावहारिक पक्ष में अपनी उपयोगिता भी साबित करने में सफल होंगी। क्योंकि इनमें उन्हीं बातों का वर्णन किया गया है, जो उनके दैनिक जीवन के कई पक्षों से जुड़ी हुई हैं। ये सभी रचनाएं 'राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' के अन्तर्गत प्रकाशित की गई हैं।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ प्रौढ़ शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अपने कर्त्तव्य का पालन करता आ रहा है। अपनी इन्हीं महान् परम्पराओं के अनुसार इसने नव-साक्षर भाई-बहनों के लिए अनुवर्ती साहित्य तैयार करने के लिए इन्दौर में 6 मई से 9 मई 1979 तक एक 'लेखक कार्यशाला' का आयोजन किया। इस कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन विक्रम विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति तथा हिन्दी के प्रख्यात कवि डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने किया। इसके समापन समारोह की अध्यक्षता, इन्दौर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० देवेन्द्र शर्मा ने की।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का बहुत आभारी है, जिसने इस कार्यशाला के आयोजन और पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

संघ उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं का भी आभारी है, जिन्होंने इस कार्यशाला की सफलता में अपना पूरा सहयोग दिया है।

आशा है, पाठकों को ये रचनाएं अवश्य पसन्द आयेंगी।

— बी० एस० माथुर
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

29 फरवरी, 1980

सपना

तमसा नदी, जहां मोड़ के साथ तेउथर कस्बे को पार करती है, वहीं पर बसा हुआ है एक छोटा सा गांव 'पनासी'। बस्ती नदी से कुछ हट कर है। पनासी के आस पास ऊंचे-वृक्षों का बड़ा फैलाव है। दूर से देखने पर बस्ती का अता-पता भी नहीं चलता। हरे भरे वृक्षों के बीच बसे हुए गांव में अधिकतर खेतिहर मजदूरों की आबादी है, जिनके पास या तो जमीन बिल्कुल ही नहीं है या इतनी कम है कि उससे उनकी गुजर बसर किसी भी तरह से नहीं हो पाती। इस गांव में ठाकुरों का बोल-बाला है। सुकुलों की भी हालत खासी अच्छी है। गांव की आधी से अधिक जमीन ठाकुरों के परिवारों में बंटी हुई है। बाकी पर सुकुलों का अधिकार है। 100 में 80 जनों की आबादी हरिजनों, आदि-

वासियों और पिछड़ी जातियों की है जिनमें करीब-करीब सभी ठाकुरों और सुकुलों के यहां पुश्त-दर-पुश्त काम करते चले आ रहे हैं। इतना होने पर भी इनके झोंपड़े जिस जमीन पर बने हैं, वह जमीन भी उनकी अपनी नहीं है। न जाने कब से ये इस हालत में रह रहे हैं। कहा जाता है कि इनके बाप-दादे भी इसी तरह रहते आये थे। गरीबी का यह हाल है कि इनके शरीर पर कभी भी साबुत कपड़े नहीं देखे गए। चाहे झुलसती हुई गर्मी हो या कलेजे में चुभने वाली सर्दी। अध-नंगे और फटेहाल रहना इनकी किस्मत में है। यहां तक कि खाने पकाने के पूरे बर्तन भी इनके झोंपड़े में नहीं हैं।

पनासी के बहुसंख्यक निवासियों को पीने के पानी की जरूरत पूरा करने के लिए क्या कुछ करना पड़ता है यह सुनकर कलेजा मुंह को आने लगता है। गांव में केवल दो ही कुएं हैं—एक ठाकुर परिवार में और दूसरा सुकुलों के मुहल्ले में। इन दोनों से पानी उन्हें नहीं मिल पाता। क्योंकि ये कुएं केवल ऊंची जाति वालों के लिए ही माने जाते हैं। नदी का पानी दूर तो है ही साथ ही, नदी तक पहुंचने का रास्ता भी बड़ा ऊबड़-खाबड़ है। ठाकुरों और सुकुलों ने इन अभागों को पानी देने की एक शर्त बांध रखी है। इन दोनों परिवारों ने अपने खेतों की सिंचाई के लिए बहुत से कुएं खेतों में बना रखे हैं। इन्हीं कुओं से उन्हें पानी मिल सकता है बशर्ते कि इन दोनों परिवारों के जानवरों का गोबर

सुबह-शाम हरिजनों द्वारा ही उठाया जाए और 'सार' की सफाई वे लोग ही करें। इसलिए इन की औरतें भोर में ही जानवरों के 'सार' की सफाई करने चली जाती हैं तभी खेत के कुओं से इन्हें पानी मिल पाता है। जिनकी गोद में बच्चे होते हैं वे भी गोबर उठाती हैं और अपने बच्चों की देखभाल करती हैं।

पनासी में ऊँची और नीची जाति वालों के अतिरिक्त एक और प्राणी भी बसता है। इसकी न तो जाति का पता है और न ही धर्म का। यह प्राणी समान रूप से सभी से आदर और इज्जत पाता है। कुछ लोग कहते हैं कि बाबा प्रेमानन्द सिद्ध पुरुष हैं। बस्ती के एक छोर पर बने हुए पुराने मन्दिर में बाबा प्रेमानन्द कहां से आकर रहने लगे हैं इसकी ठीक-ठीक जानकारी किसी को भी नहीं है। मन्दिर जो कि एक तरह से खण्डहर ही है, क्योंकि न तो उसमें कोई मूर्ति है और न ही वह किसी देवता-विशेष के नाम से जाना जाता है।

गांव वालों से बाबा का सम्बन्ध कुशल-क्षेम तक ही है। बाबा न तो किसी को उपदेश देते हैं और न ही कहीं आते जाते ही हैं। गांव के सभी लोग बाबा के पास आते हैं। बाबा सब से एक ही बात कहते हैं—"नया सवेरा आएगा, अभी से उसकी तैयारी करो।" नया सवेरा क्या है, कैसा होगा और कब आएगा ? इन बातों को कोई भी समझ नहीं पाया है। बाबा की इस बात का असर भी लोगों पर नहीं पड़ता। लोगों ने समझ लिया है कि यह भी एक 'सनक' है जो सिद्ध पुरुषों में हुआ करती है।

जब भी किसी को कोई दुख, तकलीफ होती है तो वह बाबा के पास जाता है। बच्चे बीमार होते हैं तो मातायें बाबा के पास ले जाती हैं। सभी तरह की मुसीबतों का हल बाबा के पास है, ऐसा लोगों ने समझ रखा है। किन्तु बाबा न तो कभी झाड़-फूंक करते हैं और न कष्टों को दूर करने की ही तरकीब बताते हैं। वे तो केवल मुस्कराते ही हैं। बहुत हुआ तो सिर पर हाथ रख देते हैं। हां 'नए सवेरे' की तैयारी के लिए कहना नहीं भूलते। बाबा के पास आकर ऊँच और नीच एक हो जाते हैं। जातियों के सारे भेदभाव, अपने आप ही खत्म हो जाते हैं। बाबा के मन्दिर में आकर न तो हरिजन अछूत रह जाता है और न सवर्ण ऊंची जाति का। एक तरह से बाबा प्रेमानन्द ऊंची और नीची जाति वालों के बीच एक पुल की तरह हैं जो दोनों को जोड़ते हैं।

बाबा के सामने गांव की ऊंची और नीची जाति के लोगों में किसी तरह का फर्क नहीं देखा बरता जा सकता। किन्तु जब वे अपने-अपने घरों को लौट जाते हैं तो जात-पात का भेद खुल कर सामने आ जाता है। इस तरह पनासी गांव का जीवन चल रहा था। न कोई हलचल थी। न विरोध था, न शिकायत थी।

पनासी में मोचियों के झोंपड़ों के बीच एक ऐसा घर भी है जो घास-फूस का न होकर मिट्टी का बना हुआ है तथा जिसकी छत खपरैल की है। यह घर मलुआ मोची

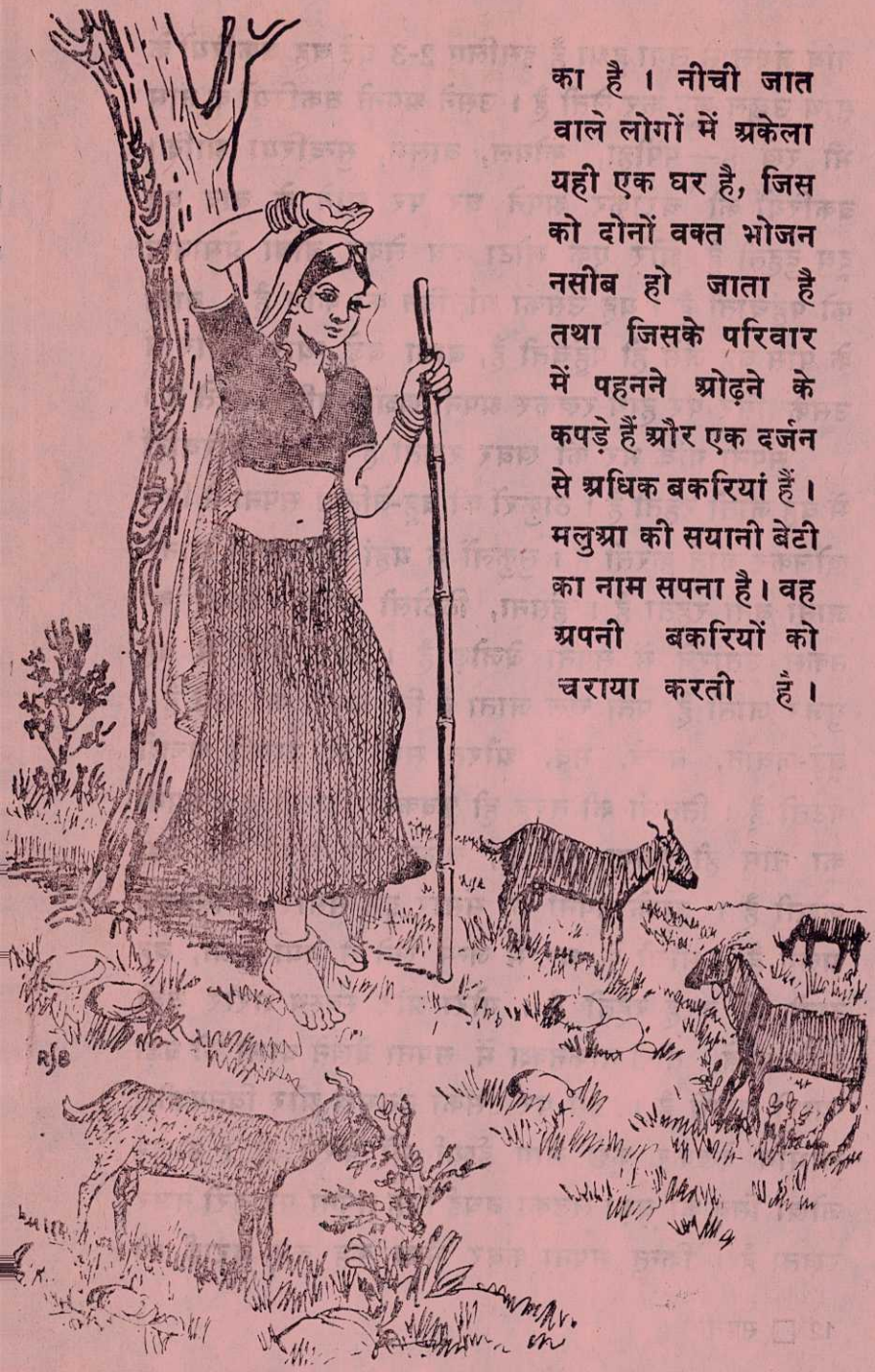

का है । नीची जात वाले लोगों में अकेला यही एक घर है, जिस को दोनों वक्त भोजन नसीब हो जाता है तथा जिसके परिवार में पहनने ओढ़ने के कपड़े हैं और एक दर्जन से अधिक बकरियां हैं । मलुआ की सयानी बेटी का नाम सपना है। वह अपनी बकरियों को चराया करती है ।

गांव जंगल से लगा हुआ है इसलिए 2-3 घंटे वह बकरियों के साथ उछल-कूद कर लेती है। उसने अपनी बकरियों के नाम भी रखे हैं—पपीहा, कोयल, बालम, सुन्दरिया आदि। बकरियों को चराकर अपने घर पर आने के बाद वह दूध दुहती है और एक लोटा दूध लेकर बाबा प्रेमानन्द को पहुंचाती है। यह उसका प्रतिदिन का काम है। बाबा के पास वह जैसे ही पहुंचती है, बाबा बड़े प्यार दुलार से उसके सिर पर हाथ रखकर अपनी खुशी जाहिर करते हैं।

सपना गांव भर की खबर रखती है। सभी परिवारों में वह जाती रहती है। ठाकुरों की बहू-बेटियां सपना से दिल खोलकर बातें करती हैं। सुकुलों के यहां भी उसका आना-जाना बना रहता है। हंसना, ठिठोली करना, किसी की नकल उतारने में सपना बेजोड़ है। जिस गली से वह गुजर जाती है, पता चल जाता है कि सपना जा रही है। बूढ़े-जवान, बच्चे, मर्द, औरत सभी से उसकी अच्छी पटती है। तितली की तरह ही फुदकती फिरती है। सपना का नाम ही सपना नहीं है, बल्कि वह सपने भी देखा करती है। उसके सपनों का संसार इस संसार से बिल्कुल अलग है। मोची के घर में जन्म लेने से क्या हुआ, वह रानी की तरह रहती है। गोरा और स्वस्थ शरीर बड़ी बड़ी आंखें, तीखे नाकनक्श में सपना देखने वालों को बड़ी प्यारी लगती है। इस पर उसका हंसमुख और विनयशील स्वभाव देखकर कुछ लोग ईर्ष्या भी करते हैं। ठाकुर जोखा सिंह का बड़ा लड़का बधई सिंह सपना पर बुरी नजर रखता है। किन्तु सपना कंवर भैया कह कर बुराई को

जमने नहीं देती। इसी तरह रघुनन्दन सुकुल का छोटा भाई परसू भी सपना पर जान देता है, किन्तु सपना इन लोगों के लिए 'सपन' बनी हुई है। क्या मजाल जो सपना से कोई ऐसी वैसी बातें कर ले! हिम्मत और निडरता के साथ-साथ ऐसी मुंहफट है कि सबके सामने ऐसे लोगों को नंगा कर देती है।

मलुआ मोची की घरवाली रघुनन्दन सुकुल के जानवरों का गोबर उठाती थी। 'सार' की सफाई भी करती थी और बदले में केवल उनके खेत के कुएं से पानी लेती थी। जब वह सुकुल के गौशाले में सफाई करने जाती तो सपना अपने दोनों छोटे भाई और बहन को संभाला करती थी। साथ ही घर का पानी भरा करती थी। अचानक सपना की मां के सीने में दर्द हुआ और वह एकाएक चल बसी। इस विपत्ति ने सपना के ऊपर अधिक भार डाल दिया। एक साल की छोटी बहन और दो साल के भाई की देखरेख अब सपना को करनी पड़ी। एक दिन वह सुबह सवेरे रघुनन्दन सुकुल के यहां सफाई करने नहीं पहुंची। जब 'सार' में गोबर पड़ा रहा और कोई उठाने नहीं आया तो रघुनन्दन का पारा गरम हो गया और अंट-शंट बकते हुए मलुआ के घर जा पहुंचा। मलुआ सूरज निकलने के पहले ही अपना थैला लेकर तेउथर गांव में चला जाता था जहां वह जूतों की मरम्मत किया करता। सपना ने कहा, "काका, छोटी बहन और भाई की संभाल के कारण बड़े सवेरे मैं सफाई करने

नहीं पहुंच सकती।"

रघुनन्दन ने क्रोध से कहा–"तुम नहीं आ सकती तो सफाई तुम्हारा बाप करेगा।"

सपना ने कहा—"काका, आप भी तो मेरे बाप जैसे ही हो।"

"चुप रह लुच्ची। छोटे मुंह और बड़ी बात करती है। अब अगर खेत की तरफ पानी लेने गई तो तेरी टांगे तोड़ कर रख दूंगा।"

सपना भी गुस्से में आ गई। उसने कहा, "काका जी, अपनी सार की सफाई का कोई दूसरा इन्तजाम कर लो, मैं अब तुम्हारे यहां सफाई करने नहीं आऊंगी। पानी भी तुम्हारे कुएं से नहीं भरूंगी।"

इतना सुनते ही रघुनन्दन काका का गुस्सा और भी बढ़ गया। गरजते हुए उन्होंने कहा–"मोची की छोकरी तेरी इतनी मजाल। तुम्हारा गांव में रहना मैं दूभर कर दूंगा। तूने समझ क्या रखा है ?"

थोड़ी ही देर में पूरे पनासी गांव में यह खबर फैल गई कि सपना ने रघुनन्दन काका के जानवरों का गोबर उठाने से इन्कार कर दिया है। फिर क्या था, सभी के कान खड़े हो गए। आपस में कानाफूसी होने लगी। यह बीमारी फैल सकती है। आज रघुनन्दन के यहां का गोबर उठाना बन्द हुआ है तो कल गांव के दूसरे लोगों के साथ भी यही कहानी दोहराई जा सकती है। धीरे-धीरे बात तूल पकड़ती

जा रही थी। गांव में इस तरह की यह पहली घटना घटी थी। इसके पहले किसी भी नीची जाति वाले ने ऊंची जाति के लोगों को ऐसी चुनौती नहीं दी थी।

मलुआ शाम के बाद जब अपने घर लौटा, तो रास्ते में ही उसकी बेटी और रघुनन्दन सुकुल के साथ हुई झगड़े की बात उसे मालूम हो गयी थी। घर आकर वह सपना को डांटने-फटकारने लगा। उसने कहा–"सुकुल और ठाकुर हमारे मालिक हैं। उनकी मर्जी के खिलाफ हम कुछ भी नहीं कर सकते। तूने रघुनन्दन भैया से बहस कर के अच्छा नहीं किया है।"

सपना ने कहा, "बापू तू यह चाहता है कि अपने छोटे भाई और बहन को छोड़ कर मैं सफाई करने चली जाया करूं। मैं ऐसी धौंस में आने वाली नहीं हूं। उन लोगों ने हमारे परिवार को गुलामों की तरह खरीदा तो नहीं है। सफाई के बदले आखिर कुएं से पानी ही तो मिलता है न। अब कभी उनके कुएं से पानी नहीं लाऊंगी। थोड़ी परेशानी और देरी जरूर होगी, किन्तु इनको भी तो पता चलेगा।"

मलुआ ने कहा, "बेटी पानी की ही बात नहीं है। हमारे बाप-दादों के जमाने से जो प्रथा चली आ रही है उसे तोड़ने से कोई लाभ नहीं होगा। हमारा पूरा निस्तार उन्हीं की जमीन पर होता है। कल को सुकुल और ठाकुर एक हो गए तो हमारे निकलने के लिए रास्ता भी नहीं

रहेगा। गांव में चारों तरफ उन्हीं की जमीन है। यदि हम लोग उनसे बिगाड़ कर लेते हैं तो फिर क्या पनासी गांव में हम रह सकेंगे ?"

"बापू, क्या हम लोग इन ठाकुरों और सुकुलों के हाथ बिके हुए हैं ? धरती तो भगवान की होती है। यदि यही लोग भगवान हैं तो हम इस गांव में नहीं रहेंगे। क्योंकि इनका अन्याय अब हमसे सहा नहीं जाएगा।" सपना ने दुखी होकर कहा।

जहां हमारे पुरखे रहते आए हैं, वहां से कहां जाएं ? हम लोगों के भाग्य में यही तो बदा है। "बाबा हम लोग कितने वर्षों से इस गांव में रह रहे हैं ?" सपना ने पूछा "जब से पनासी गांव बसा है। कोई....कई सौ बरस हो गए होंगे।" मलुआ ने उत्तर दिया। "बापू, क्या ठाकुर और सुकुल पनासी गांव की जमीन अपने साथ लाए थे ?"

"नहीं बेटी। भला जमीन भी कोई अपने साथ में ला सकता है ?"

"तो बापू, पनासी में आने के बाद क्या ठाकुरों और सुकुलों ने जमीन बनाई है ?"

तू कैसी पागलपन की बातें कर रही है ? जमीन भी कोई बनाने की चीज है ?"

सपना ने कहा—"जब ये लोग जमीन अपने साथ लाए नहीं और इन्होंने उसे खुद बनाया भी नहीं तो फिर पनासी गांव की पूरी जमीन के मालिक कैसे हो गए ? पनासी में ज्यादा घर तो हम लोगों के ही हैं। हमारे पास तो कुछ भी नहीं है ?"

"यही तो किस्मत का खेल है बेटी।" मलुआ अपनी लड़की के सीधे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सका। सपना को ऐसा लग रहा था कि मुट्ठी भर लोगों ने हम नीची जाति वाले लोगों को अपनी गुलामी के लिए रख रखा है। पीढ़ियां गुजर गईं। हम वैसे ही रह गये। आगे भी इसी तरह रहना होगा।

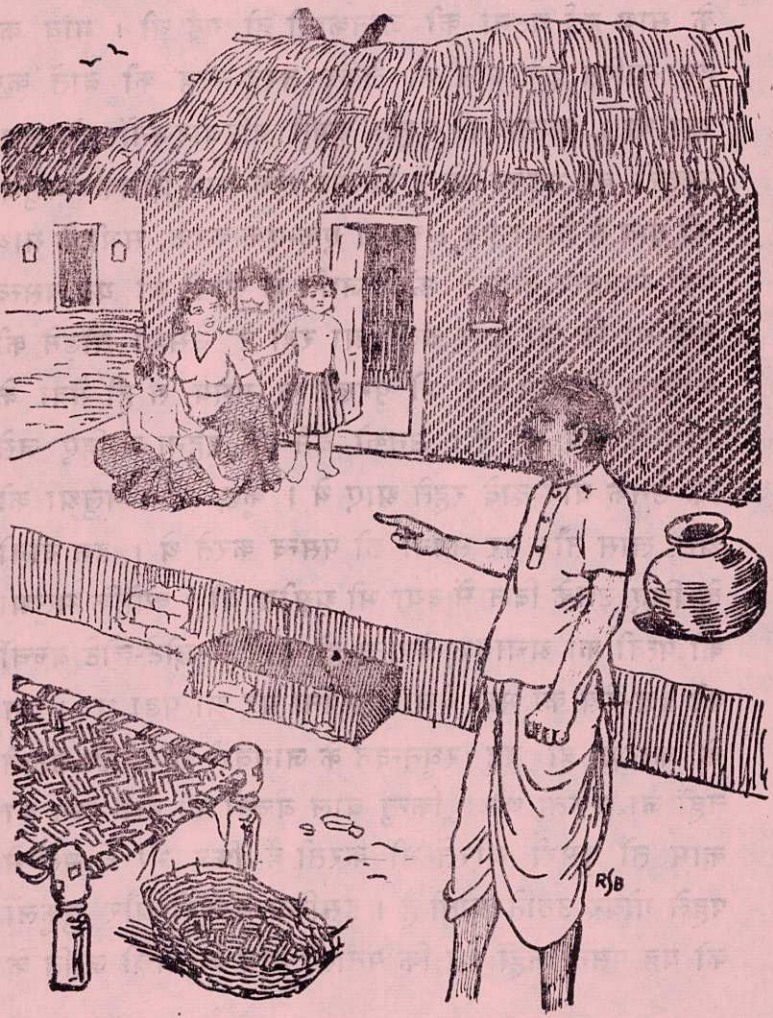

मलुआ भी खा-पीकर लेट गया। उसे भी आज नींद नहीं आ रही थी। उधर सपना भी तरह-तरह की बातें सोचती हुई सो गई।

सपना पानी भरने के लिए दूर नदी पर जाने लगी। यद्यपि नदी तक जाने का रास्ता ठीक नहीं था। लेकिन दूसरा उपाय भी नहीं था। बाबा प्रेमानन्द को भी सपना के साथ हुई घटना की जानकारी हो गई थी। गांव का हर व्यक्ति इस बात को लेकर तरह-तरह की बातें कर रहा था। रघुनन्दन सुकुल अपने परिवारजनों को तथा ठाकुरों को भड़का रहे थे कि सब एक साथ मिलकर मलुआ को गांव से निकाल दें। वरना एक-एक करके, सभी के साथ यही व्यवहार होगा। ऊंची जाति के लोगों को यह पसन्द नहीं था कि जो प्रथा चली आ रही है उसको तोड़ने की कोशिश वे लोग करें जो पुरखों के समय से ही सेवा के काम में लगे हुए हैं। उनको वैसे ही रहना चाहिए जैसे कि उनके बाप दादे रहते आए थे। कुछ लोग मलुआ को और खास तौर पर सपना को पसन्द करते थे। इन दोनों के लिए उनके दिल में दया भी असीम थी। क्योंकि मलुआ की पत्नी का अचानक देहान्त हो जाने से छोटे-छोटे बच्चों की देख-रेख का भार बेचारी सपना पर आ पड़ा था। इस के कारण ही वह रघुनन्दन के जानवरों का गोबर उठाने नहीं जा सकती थी। किन्तु बाल बच्चों की देख-भाल का काम तो दूसरी औरतें भी करती हैं फिर भी वे सब से पहले गोबर उठाने आती है। इसलिए ठाकुरों और सुकुलों को यह पसन्द नहीं था कि पनासी गांव के नीची जाति के

लोग कोई बहाना बना कर उस नियम को तोड़े और मन-मानी करें। यही कारण था कि रघुनन्दन सुकुल के साथ सभी लोग 'हाँ में हाँ' मिला रहे थे। अब उन्हें यह तय करना था कि मलुआ और उसकी बेटी के साथ क्या सलूक किया जाए ?

रघुनन्दन का बड़ा लड़का राजेश्वर इलाहाबाद में पढ़ता था। विश्वविद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ वह एक ऐसी पार्टी का सदस्य भी बन गया था जो समाज सुधार के काम में सब से आगे रहती थी। उसने 'भेद भाव मिटाओ' का एक आन्दोलन चला रखा था। राजेश्वर इस आन्दोलन का प्रमुख था। एम. ए. समाजशास्त्र में प्रथम श्रेणी में पास करने के बाद विश्वविद्यालय में ही उसको उसी विषय में खोज का काम करने के लिए वजीफा मिलने लगा था। अपने गांव पनासी में वह बहुत ही कम आता जाता था एक तो पार्टीके कामों से उसे फुर्सत ही नहीं मिलती थी और दूसरी बात यह थी कि पढ़ने लिखने के अलावा उसका अन्य किसी काम में मन भी नहीं लगता था। साधारण ढंग से रहता था। बाहरी तड़क-भड़क उसे पसंद नहीं थी। अपने शोध कार्य में पहली बार उसको एक पिछड़े हुए गांव के लोगों के रहन-सहन के संबंध में कुछ बाते जानने की जरूरत हुई तो शीघ्र ही उसको अपने गांव पनासी की याद आ गई। वह पनासी जाने की तैयारी करने लगा और पार्टी का काम अपने एक सहायक को सौंप कर एक महीने के

लिए गाँव में आ गया।

राजेश्वर जिस दिन पनासी आया, उसी दिर रघुनंदन इधर से उधर आ-जा रहा था। उन्होंने अपने दिल में ठान लिया था कि मलुआ तथा उसकी बेटी को गांव से निकाल कर ही चैन लेंगे। किन्तु जैसे ही राजेश्वर घर पर आया, वह सब कछ भूल गया और अपने बेटे की सुख सुविधा का बन्दोबस्त करने लगा। बैठक की सफाई होने लगी। जरूरी सामान उसमें रखा जाने लगा। पनासी में राजेश्वर का आना क्या हुआ, रघुनन्दन के घर पर लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी। होली दिवाली पर जब कभी राजेश्वर पनासी आता तो एक शाम से अधिक वह रुकता नहीं था। कभी-कभी वह तीज त्यौहार पर भी घर नहीं आता था। इलाहाबाद में प्रयाग का तीर्थ होने के कारण उसके माता-पिता और अन्य बन्धु वहीं डटे रहते थे। एक तरह से घर की तरह ही इलाहाबाद में भी सभी सामान और खाने-पीने का जुगाड़ बना रहता था। इसीलिए राजेश्वर पनासी का होते हुए भी गांव वालों के लिए बहुत दूर का था। कछ लोग तो राजेश्वर को पहचानते भी नहीं थे।

जब से राजेश्वर अपने गांव में आया है, मिलने वालों की एक भीड़ जमा रहती है। लोग तरह-तरह की बातें उससे पूछते हैं। मिट्टी के तेल की कमी से लेकर प्रधान मंत्री तक की वहां चर्चा होती है। गांव वाले समझते हैं कि राजेश्वर बहुत बड़ा नेता, पढ़ा-लिखा और सब बातों का जानने वाला है। ठाकुर शत्रुदमन सिंह भी राजेश्वर से मिलने आए। वे ठाकुर परिवार में अगुआ और इज्जत वाले समझे जाते

हैं। उनकी बात को टालने की किसी की हिम्मत नहीं होती। रोब-दाब में भी उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। बातचीत में ठाकुर शत्रुदमनसिंह ने कहा "बचुआ, तुम बहुत अच्छे समय पर आए हो। अब तुम्हीं को मलुआ मोची के बारे मे फैसला करना है।"

राजेश्वर ने कहा—"काका साहब जी, मलुआ मोची के बारे में मुझको कछ भी पता नहीं है, किस बात का फैसला करना है ?"

ठाकुर साहब ने कहा–"पुरखों के समय से चले आ रहे कायदे कानून को अब तोड़ने की कोशिश की जा रही है। मलुआ की लड़की ने तुम्हारे जानवरों का गोबर उठाने से साफ मना कर दिया है। हमारी ही जमीन पर वह बसा है। उसी में उसका निस्तार है। इसीलिए मैं समझता हूं कि मलुआ तथा उसकी लड़की को गांव से बाहर कर देना चाहिए, ताकि दूसरों को, फिर कभी ऐसी हरकत करने का मौका ही न मिले। राजेश्वर ने कहा–"काका साहब, यह तो सरासर अन्याय है, कोई आपका गोबर न उठाए तो उसे गांव से ही बाहर निकाल दें। यह कोई कानून नहीं है। यह कभी भी नहीं हो सकता।"

"बचुआ तुम क्या कह रहे हो। हमारा यह अधिकार है कि हम अपनी जमीन से जिस किसी को भी चाहें अलग कर दें।" ठाकुर साहब के तेवर बिगड़ रहे थे।

"अब वह जमाना नहीं है, जब हम हरिजनों, आदिवासियों और पिछड़ी हुई जातियों के साथ जैसा चाहते वैसा सलूक कर सकते थे। मलुआ को गांव से निकालने

का विचार छोड़ दें। किसी से जबरिया हम उसकी मर्जी के खिलाफ कोई काम नहीं ले सकते।" ठाकुर साहब को जैसे बिच्छू ने छू दिया हो।

एकदम तमक कर उठते हुए उन्होंने कहा, "मालूम होता है अब पनासी गांव में भी शहर की हवा आयेगी। ठीक है, जैसा चाहो वैसा करो। अपने पिता जी से भी कह दो कि मलुआ को पानी भी अपने कुएं से भरने दें। उसकी लड़की नदी से पानी लाती है।" इतना कहते हुए ठाकुर शत्रुदमन सिंह जी अपनी हवेली की ओर चले गए।

राजेश्वर को पहली बार इस बात का पता चला कि उसका गांव अभी कितना पिछड़ा हुआ है। दरअसल शहरों में रहकर समाज सुधार की बातें करना कितना आसान होता है। उसे खुद अपने ही घर से 'भेदभाव मिटाओ' का आन्दोलन शुरू करना होगा। लोगों के मन में छोटी जाति वालों के लिए कैसी गलत बातें समाई हुई हैं।

दूसरे दिन सुबह जब राजेश्वर घर के बाहर नदी की ओर घूमने के लिए गया तो उसने देखा कि एक जवान सुन्दर लड़की सिर पर दो घड़े रखे हुए नदी से पानी लिए चली आ रही है। उसको समझते देर न लगी कि यह वही लड़की है, जिसके बारे में ठाकुर साहब ने कहा था कि गोबर उठाने नहीं आती। राजेश्वर एकटक उसे देखता रहा। बहुत देर तक उसके बारे में सोचता हुआ

वह वहीं खड़ा रहा। आधे घंटे के बाद राजेश्वर ने देखा कि वह लड़की खाली घड़ों को लिए हुए फिर आ रही है। जब वह पास आ गई तो राजेश्वर ने पूछा–"तुम्हारा नाम क्या है ?" "क्यों नाम पूछकर क्या करोगे ?" (अकेले में किसी नवयुवक को देखकर शंका से भर गई।)

"क्या नाम बताने में कोई हर्ज है ? तो लो पहले मैं ही अपना नाम बताए देता हूं मेरा नाम राजेश्वर है।"

"जी मेरा नाम सपना है, आप सुकुल काका के .... ।"

बीच ही में राजेश्वर ने कहा-"हां, मैं उनका ही लड़का हूं, इलाहाबाद में रहने के कारण मुझे अपने गांव के लोग भी नहीं पहचानते।"

सपना ने भरपूर नजरों से राजेश्वर को देखा, कहां

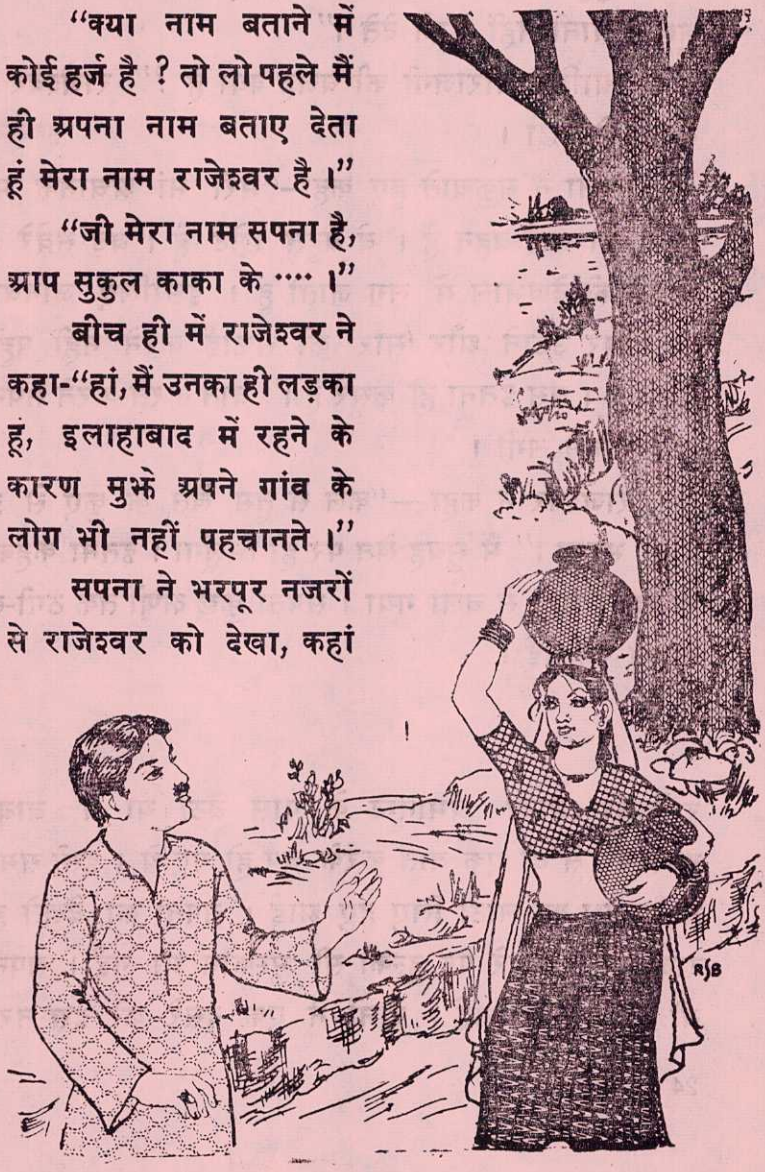

सुकुल काका कहां उनका लड़का ! अपने मन में दोनों में जो अन्तर था, वह उसकी समझ में आ गया।

राजेश्वर ने फिर पूछा–"तुम नदी से पानी क्यों भरने आती हो।"

"सुकुल काका नाराज हो गए हैं। वे अपने खेत के कुएं से पानी नहीं भरने देते।"

"आखिर नाराजगी की वजह क्या है ?" राजेश्वर ने सपना से पूछा।

सपना ने सकुचाते हुए कहा–"मेरी मां अचानक मर गई। दो भाई-बहन हैं। वे बहुत छोटे हैं। बड़े सवेरे से ही उनकी देखभाल में लग जाती हूं। इसीलिए जानवरों का गोबर उठाने और 'सार' की सफाई करने नहीं पहुंच पाती हूं। बस इतना ही कसूर है।" बात करते-करते सपना कुछ सोचने लगी।

राजेश्वर ने कहा—"कल से तुम खेत के कुएं से ही पानी भरना।" मैं सुबह खेत पर ही मिलूंगा। इतना कहकर राजेश्वर वहां से चला गया। सपना कुछ क्षणों तक ठगी-सी देखती रह गई।

राजेश्वर बाबा प्रेमानन्द के पास बैठा था। बाबा, राजेश्वर से दो एक बातें करके चुप हो गए थे। इसी समय सपना दूध का लोटा लिए हुए आई। सपना को देखते ही राजेश्वर के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। सपना भी खुशी से भर गई। दोनों ने एक दूसरे को इस तरह

देखा जैसे बहुत पुरानी जान-पहचान हो। बाबा की नजरों ने भी चार आंखों के खेल को देखा। उन्होंने कहा–"अब नया सवेरा आएगा।"

राजेश्वर को ऐसा लगा, जैसे उसकी चोरी बाबा ने पकड़ ली हो। वह शर्मिन्दा हो गया। सपना इधर-उधर की सफाई में लग गई, किन्तु रह-रह कर वह भी राजेश्वर को देख लेती थी।

कुछ देर के बाद सपना ने बाबा से कहा–"राजेश्वर बाबू अपने खेत के कुएं से पानी भरने के लिए कहते हैं। उधर सुकुल काका मना करते हैं"

बाबा ने उत्तर दिया–"रघुनन्दन से पहले बात कर लो तब दोबारा कुएं से पानी भरने की बात करना। अपने पिताजी को समझाओ। उनकी आज्ञा से ही पानी भरने की बात कहो।"

राजेश्वर ने कहा—"कल ठाकुर शत्रुदमन सिंह कह रहे थे कि सपना तथा उसके पिता को गांव से निकाल दिया जाये। मैं यह कभी नहीं चाहूंगा कि ऊंची जाति के लोग बेगुनाहों के साथ जोर-जुल्म करें। जाति भेद की खाई को पाटने के लिए मैं अपनी जिन्दगी सौंप चुका हूं। मेरे पिताजी भी लकीर के फकीर हैं। अभी उनसे बात-चीत नहीं हुई है। मैं सपना को अपने खेत के कुएं से पानी भरने के लिए कह चुका हूं और इसे पानी भरने से कोई भी रोक नहीं सकता। चाहे मेरे पिताजी ही क्यों न हों।"

सपना जहां थी वहीं खड़ी रह गई। उसे ऐसा लगा जैसे धरती घूम रही हो। राजेश्वर की बातों में कुछ ऐसी गह-

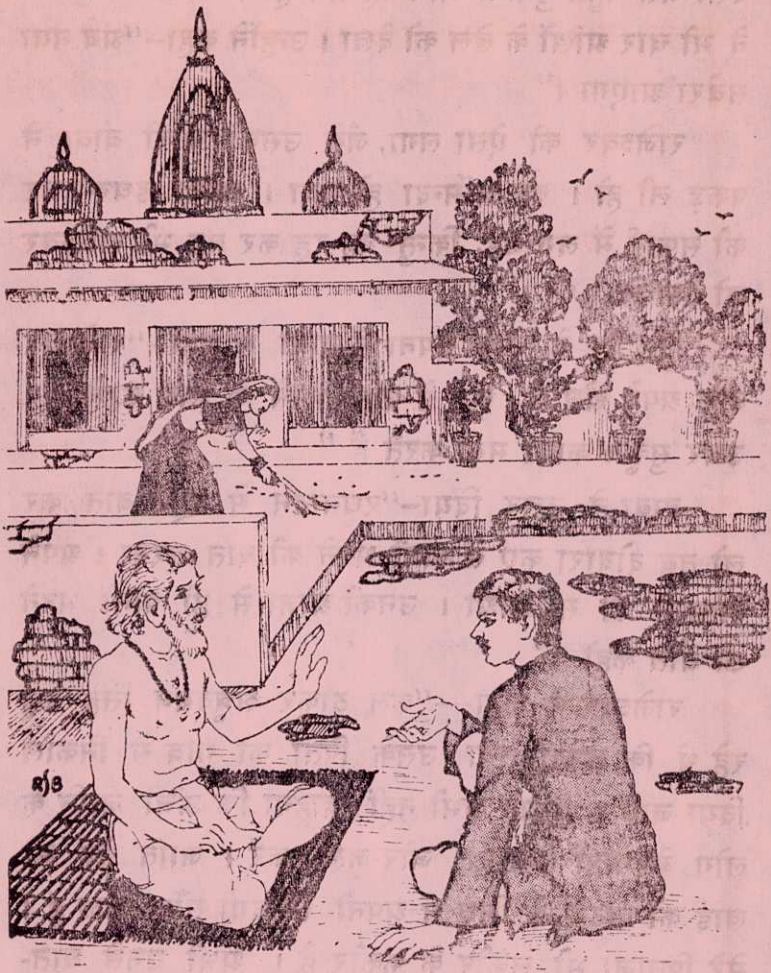

राई थी, जिसे सपना भी समझ चुकी थी। अनपढ़ हुई तो क्या वह हर बात को खूब गहराई से सोचती समझती थी।

बाबा प्रेमानन्द ने कहा—"नया सवेरा आएगा। सपना का 'सपना' जरूर पूरा होगा।"

बाबा की बातों को सुन कर सपना की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। राजेश्वर ने इसे देख लिया था।

धीरे धीरे सपना बाबा के पास आई और बोली—

"बाबा, आप राजेश्वर बाबू को समझा दें। मेरे लिए सुकुल काका से कोई झगड़ा-मोल न करें। इन्होंने इतनी बातें कह दीं यही बहुत हैं।"

राजेश्वर ने कहा—"इसमें झगड़े की कोई बात नहीं है। यह तो सरासर अन्याय है। यह चुपचाप देखा नहीं जा सकता। दुनिया के लोग चांद और सितारों पर जा रहे हैं और हम जात-पात के गहरे गड्ढे में उतर रहे हैं। इसे तोड़ना है। यह भी संयोग की बात है शुरुआत मेरे ही घर से होने वाली है। बाबा चुपचाप थे। सपना की बड़ी-बड़ी आंखों में लाल-लाल डोरे उभर आए थे। राजेश्वर को इस हरिजन बाला ने मोह लिया था। सीधा-सादा, अपनी धुन में लगा रहने वाला राजेश्वर यह भूल गया कि उसे पनासी गांव के लोगों के रहन-सहन का पता लगा कर कुछ लिखना है। उसे सब कुछ अधूरा लग रहा था। जैसे उसकी पढ़ाई-लिखाई की डिग्री को पनासी में ऊंच-नीच का भेदभाव ललकार रहा हो।

खामोशी को तोड़ते हुए राजेश्वर ने कहा—"सपना, तुम इसे झगड़े की बात न समझो यही मेरी असली परीक्षा का समय है। जो परीक्षाएं अभी तक मैं कालेज और विश्वविद्यालय में पास करता आ रहा था उसकी अच्छाई और सच्चाई की जांच अब तुम्हारे साथ हो रहे अन्याय के साथ होने वाली है। एक तरफ मेरा परिवार और गांव के बड़े-बूढ़े लोग हैं जो अपनी भलाई के लिए ही सोचते हैं और दूसरी तरफ 'भेद-भाव मिटाओ' आंदोलन का यह सेवक है। अब ऐसा नहीं हो सकता कि बड़ी-बड़ी

सभाओं में अछूतों से प्यार करने की बातें तो कही जाएं और जब सचमुच ऐसा मौका आए तो अपना हित, अपनी भलाई और दूसरी बातों का सहारा लेकर मुंह फेर लें। कथनी और करनी में अब फरक चलने वाला नहीं है। दोहरी बातों का समय अब बीत गया है।" कहते-कहते राजेश्वर भावुक हो गया।

राजेश्वर और उसके पिता रघुनन्दन सुकुल, खेत की तरफ चले जा रहे थे। बातों-बातों में रघुनन्दन ने कहा, "बचुआ, अब तो मेघों (मेंढ़कों) को भी जुकाम होने लगा है?" क्या समय आ गया है।

"बाबूजी आपकी बात समझ में नहीं आई।" राजेश्वर ने कहा।

"मलुआ मोची की छोरी ने हमारे जानवरों के गोबर की सफाई करने से साफ इन्कार कर दिया। वह तो कहती है कि अपना दूसरा बन्दोबस्त कर लो। बाबा प्रेमानन्द ने भी उसे सिर पर चढ़ा रखा है। अब गांव से इन लोगों को निकालना ही पड़ेगा। अच्छा हुआ तुम आ गए, इन नीचों को ऐसा सबक दो, कि दुबारा इस तरह की हरकत ही न करने पायें।"

"बाबूजी, यह तो ठीक नहीं है कि यदि कोई हमारा काम न करे, तो हम उसे गांव से ही निकाल दें। यह कहां का इन्साफ है।"

"यह लोग हमारी जमीन पर बसे हुए हैं। इनके बाप-

दादे जैसा रहते आए थे, वैसे ही इन लोगों को भी रहना है। वरना हमारी जमीन खाली कर के जहां चाहें चले जायें। हम और किसी को बसा लेंगे।" घमण्ड के साथ रघुनन्दन ने कहा।

"यदि सरकार आपसे यह कहे कि पनासी की जमीन छोड़कर आप कहीं और चले जाओ तो आप क्या करेंगे ? क्योंकि सारी जमीन तो सरकार की है। भले ही आपके नाम उसका पट्टा हो या आप उस पर बहुत वर्षों से अधिकार जमाए हुए हों।"

"यह कैसे हो सकता है कि सरकार हमसे जमीन छीन ले।" रघुनन्दन एकदम सक-पका गए।

"जब सरकार आपसे जमीन नहीं छीन सकती तो आप भी मलुआ मोची को उसके घर से नहीं निकाल सकते। पीढ़ी-दर-पीढ़ी ये लोग जिस जमीन पर बसे हुए हैं, अब वह जमीन केवल उन्हीं लोगों की है न कि आपकी और न ही यह ठाकुर शत्रुदमन सिंह के परिवार वालों की है। इस बात को आप अच्छी तरह समझ लें।" राजेश्वर ने सहज

भाव से कहा ।

"तुम तो सारे कानून बघार रहे हो, सीधी सी बात को इतना तूल देने की क्या जरूरत है । आखिर तुम्हारे जानवरों का गोबर अब तुम्हारी अपनी मां ही उठा रही है। तुम्हें यह अच्छा लगता है । दुनिया अपना भला सोचती है और तुम अछूतों का पक्ष लेकर मुझको समझा रहे हो ।"

"अपना काम करने में न तो कोई शर्म है और न किसी तरह की छोटाई हो जाती है । यह अच्छी बात नहीं है कि यदि कोई मजदूर हो तो हम उससे गलत फायदा उठाएं । मलुआ की पत्नी मर गई, उसके छोटे-छोटे बच्चे हैं। उनकी देख-रेख उसकी लड़की को करनी पड़ती है इसलिए वह आपके यहां गोबर उठाने नहीं पहुंच पाती । जैसे हम दुःख, परेशानी और विपदा में पड़ सकते हैं वैसे ही यदि कोई दूसरा भी किसी मुसीबत में फंस जाए तो हमें उसके साथ दया दिखानी चाहिए, यही धर्म है।" राजेश्वर ने अपने पिता जी को समझाने की कोशिश की ।

"शहर में पढ़-लिख कर तुम यही सीख आए हो कि अछूतों को सिर पर चढ़ा लें । यहां यह बात नहीं चलेगी । गांव की अपनी जो भी मान्यता है, प्रथा है, उसे तुम बदल नहीं सकोगे । सारा गांव मेरी बातों को मान कर मलुआ को निकालने के लिए तैयार है लेकिन अकेले तुम ही इसका विरोध कर रहे हो । आखिर लोग मुझे क्या कहेंगे ?" तमतमा कर रघुनन्दन ने कहा ।

"हजारों साल से हम लोग जो पाप करते चले आ रहे हैं, उस पाप का दण्ड अब हमें भरना ही होगा । हरिजनों

को अब अधिक दिनों तक गुलामों की तरह बांध कर नहीं रखा जा सकता और न ही उन्हें जोर-जुल्म का शिकार बनाया जा सकता है। बाबू जी आप को और ठाकुर शत्रु-दमन सिंह को अपने तौर-तरीकों में, सोचने-विचारने के ढंग में, बदलाव लाना होगा। मैं खुद 'भेदभाव मिटाओ आंदोलन' का अध्यक्ष हूं। अच्छा हुआ अपने ही घर से इसकी शुरुआत हो रही है।' राजेश्वर ने दृढ़ स्वरों में पिता को कहा। रघुनन्दन चीख कर बोले-"तो फिर शहर में जाकर चलाओ अपना आन्दोलन, यहां तुम्हारा क्या है ? न तो जमीन में तुम्हें हिस्सा दूंगा और न इस घर में तुम्हें रहने दूंगा। जाओ हरिजनों की बस्ती में, उन्हीं के बीच जाकर रहो।"

"बाबूजी आप किसी धोखे में नहीं रहना। जमीन, जायदाद, मकान इन सब का मोह मुझे बिल्कुल नहीं है। इनको आप ही सम्हालें। लेकिन जहां तक आप ने मुझे हिस्सा नहीं देने की बात कही है, शायद आपको कायदे-कानून का कुछ भी पता नही है। पुश्तैनी जायदाद में जब मैं चाहूंगा आप से अपना हिस्सा ले लूंगा, किसी भ्रम में आप नहीं रहिएगा। वैसे मैं आप से कुछ नहीं चाहता। आपका और मेरा रास्ता अलग-अलग है।" इतना कहकर राजेश्वर अपने घर की ओर वापस मुड़ कर चल पड़ा। रघुनन्दन सुकुल को अपने पैरों तले की जमीन खिसकती हुई जान पड़ी। एक ही लड़का है। कितना नाम और पढ़ा-लिखा है। क्या जरा सी बात के लिए मां-बाप को छोड़ कर चल देगा ? इसी उधेड़बुन में बहुत देर तक सोचते हुए रघुनन्दन घर की तरफ चल पड़े।

घर आकर राजेश्वर उदास हो कर बैठ गया। मां दौड़ी-दौड़ी आई और बेटे का मलिन मुख देख कर घबरा गई। उसने बड़े प्यार से पूछा–"बेटा क्या बात है ? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों है ?"

राजेश्वर ने कहा–"कुछ नहीं मां, गांव नहीं आता तो अच्छा था ?"

"अरे पगले, ऐसा भी कभी कोई सोचता है ? आखिर हुआ क्या है। मैं भी तो सुनूं।" मां की परेशानी एकदम बढ़ गई।

"बाबूजी से पूछ लेना, मैं कुछ भी नहीं जानता।"

"जब कुछ तू जानता ही नहीं तो फिर ऐसी सूरत क्यों बना ली है ? जरूर कोई बात है जो मुझसे छिपा रहा है।"

"इसमें छिपाने की कोई बात नहीं है। बाबूजी अपनी जिद्द में मलुआ तथा उसकी बेटी को गांव से निकालना चाहते हैं। मैं इसको पसन्द नहीं करता। कोई हमारा काम न करे तो हम उसे गांव से उजाड़ दें, यह कहां का न्याय है। बस इसी बात पर उखड़ गए और मुझे भी घर से निकल जाने को कह रहे हैं।"

राजेश्वर की मां बड़ी सरल व दयावान महिला थी। उनकी न तो कभी किसी से लड़ाई होती थी और न कभी उनसे किसी को शिकायत ही हुई। सपना जब गोबर उठाने नहीं आई तो एक दयालु स्त्री की तरह उन्होंने उसकी मजबूरी को समझा था और अपने जानवरों का गोबर बिना किसी गुस्से और कहा-सुनी के उठाना शूरू

कर दिया था। इसी बात को लेकर सपना तथा उसके पिता को गांव से बाहर निकालने की बात सुनकर राजेश्वर की मां को बहुत अचम्भा हुआ। इसके पहले कि वह कुछ बोलती रघुनन्दन भी घर में आ गए। मां बेटे की खामोशी को देखकर वह सारी बातें समझ गए। फिर भी चुप्पी को तोड़ते हुए उन्होंने कहा –"राजेश्वर की मां तुम भी सुन लो तुम्हारा लाडला शहर में जाकर पढ़ क्या गया वह तो अछूतों का पक्ष ले कर घर छोड़ने की भी धमकी दे रहा है। मुझ पर गांव वालों का दबाव पड़ रहा है कि मैं अपनी जमीन से मलुआ तथा उसकी लड़की को हटा दूं। आखिर हम सब को इसी गांव में रहना है। तुम समझाओ अपने लाट साहब को।" रघुनन्दन ने सफाई देते हुए कहा।

राजेश्वर की मां ने कहा–"तुम्हारी मति मारी गई है क्या। तुम्हें क्या पड़ी है किसी को उजाड़ने से। कुछ पाप-पुण्य का विचार करो। बचुआ जो कहता है ठीक है। अगर बचुआ को तुमने घर से निकाला तो मैं भी उसी के साथ चली जाऊंगी। तुम अपनी काया माया सम्हाल लेना।"

"तुम्हारा मतलब है कि अब नीची जाति के लोग हमारी बातों को सुनी अनसुनी-करते रहें। और हम लोग चुपचाप देखते रहें, कल हमारी जमीन पर वे लोग कब्जा कर लें तो भी हम सब्र करके बैठे रहें ?" रघुनन्दन खिसिया गए थे।

राजेश्वर की मां ने कहा–ऐसी हिम्मत भला उन बेचारे गरीबों में कहां आ सकती है। उनको जीने दो बस यही काफी है। भगवान के यहां से न तो कोई नीच बन कर

आया है न कोई ऊंच। मैं साफ-साफ कहे देती हूं कि तुम्हारा साथ कोई नहीं देगा। पहले अपने भाई परसू को तो

समझा लो, जो सपना के पीछे पड़ा रहता है।"

परसू और सपना की बात सुन कर रघुनन्दन और राजेश्वर एक साथ चौंक उठे। रघुनन्दन की तेजी कुछ कम पड़ गई थी। उन्होंने कहा–"परसू क्या करता है भला सुनूं तो।"

"तुम्हारा वह उजड्ड भाई क्या नहीं करता। सपना ने ठाकुरों के मोहल्ले में परसू और जोखा सिंह के लड़के बुधई को एक दिन ऐसा अपमानित किया कि देखने और सुनने वाले तक शरमा गए। लेकिन परसू को न तो लाज ही है और न शरम। या तो उसके घर का चक्कर काटेगा या बकरियों को चराने जब सपना जायेगी तो उसका पीछा करेगा। कई बार तो सपना मुझसे कह चुकी है कि काकी अपने देवरजी को सम्हालो वरना एक दिन हंसिए से सिर काटकर तुम्हारे घर पहुंचा जाऊंगी।"

सिर काटने की बात सुनते ही रघुनन्दन तड़प उठे, उसकी यह मजाल कि हमारे भाई का सिर काटेगी। मैं उसे जिन्दा जला दूंगा। जिन्दा !!" होंठ भीचते हुए रघुनन्दन ने कहा।

"बड़े आए आप जिन्दा जलाने वाले। किसी की इज्जत पर जब कोई लुटेरा हमला करेगा तो उसका सिर नहीं कटेगा तो क्या उसकी पूजा होगी। सबकी इज्जत बराबर है। चाहे छोटा हो या बड़ा।" राजेश्वर की मां ने चुनौती देते हुए कहा।

राजेश्वर ने अपनी मां से कहा—"तुम चुप रहो मां। मैं इन लोगों को देख लूंगा। सुबह से सपना खेत के कुएं

से पानी लेगी। किसी को मना करना है तो सुबह खेत पर मैं रहूंगा।"

रघुनन्दन ने कहा–"तुम दोनों मिल कर मुझे दबाने की कोशिश कर रहे हो। मैं गांव वालों को कैसे मुंह दिखाऊंगा। सभी मेरे पीछे पड़े हुए हैं कि मलुआ और उसकी लड़की को गांव से निकाला जाए। मेरी समझ में कुछ नहीं आता ! क्या करूं क्या न करूं !" रघुनन्दन दुखी हो गए।

राजेश्वर ने कहा–"आप चुपचाप रहिए। यदि कोई कुछ भी कहे तो आप उसे मेरे पास भेज दें, मैं उससे खुद निपट लूंगा। आप इस बात को मेरे ऊपर छोड़ दें।"

रघुनन्दन कुछ भी न बोले। उनकी समझ में आ गया था कि माँ-बेटे एक हो गए हैं। दोनों के साथ लड़ाई चलने वाली नहीं है। घर-गृहस्थी सब चौपट हो जाएगी। इसीलिए वे चुपचाप चारपाई बिछाकर लेट गए।

सपना अपनी बकरियों को लेकर दोपहर के समय जंगल की तरफ गई। राजेश्वर भी उसके पीछे-पीछे जंगल की तरफ रवाना हुआ। किन्तु सपना ने उसे देखा नहीं। राजेश्वर जाकर एक झाड़ी के पास छिप गया, जहां से वह सपना को भली प्रकार देख सकता था। सपना एक छोटे से पेड़ पर चढ़ गई और आराम से कोई गीत गुनगुनाने लगी। इसी समय एक छोटा सा बकरी का बच्चा, जो कि बकरा था, राजेश्वर के पास वाली झाड़ी में पत्तियां चरने

लगा। राजेश्वर ने चुपके से उस बकरे को पकड़ लिया। अब क्या था बकरा मिनमिनाकर चिल्ला उठा। 'बालम ओ बालम' कह कर सपना चिल्लाने लगी। 'बालम' बकरे को पकड़ रखा था राजेश्वर ने। दौड़ कर जैसे ही वह बालम के पास आई वहां राजेश्वर सुकुल को देखकर सकुचा गई। राजेश्वर ने बकरे के बच्चे को छोड़ दिया और सपना का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया, अब वह भी झाड़ियों की ओट में छिप गई थी।

राजेश्वर ने पूछा,–"तुम किस बालम को पुकार रही थीं ?"

सपना उत्तर न देकर चुपचाप बैठी रही। राजेश्वर ने फिर कहा–"सपना तुम से बहुत जरूरी बातें करनी हैं। इसीलिए तुम्हारे पीछे पीछे मुझे यहां तक आना पड़ा।" सपना की बड़ी बड़ी आंखें, राजेश्वर की ओर उठ गईं और उसे कई क्षणों तक एक-टक निहारती रही फिर भी वह कुछ बोली नहीं। हां, वह कुछ घबरा जरूर रही थी। अपनी इस परेशानी को वह अधिक देर तक छिपाए नहीं रख सकी और धीरे से कहा—"इस तरह छिप कर बैठे हुए कोई देख ले तो क्या होगा ? मैं पनासी में सिर ऊंचा करके चलती हूं राजेश्वर बाबू। इसका आप को ख्याल रखना है।"

राजेश्वर ने सपना की बातों को समझते हुए कहा–"कभी-कभी ऐसा भी करना होता है कि छिपकर सलाह की जाती है, इसमें कोई पाप नहीं है।"

"आप क्या सलाह लेना चाहते हैं।" सपना ने कहा।

राजेश्वर ने कहा–"सपना क्या तुम मेरा साथ दे सकती हो ?"

"आपको, मेरे साथ की जरूरत कैसे पड़ गई ? आप शहर में रहते हैं। वहां आपको बहुत से साथी मिल जाएंगे मैं गंवार, अनपढ़ आपका साथ देकर आपके लिए

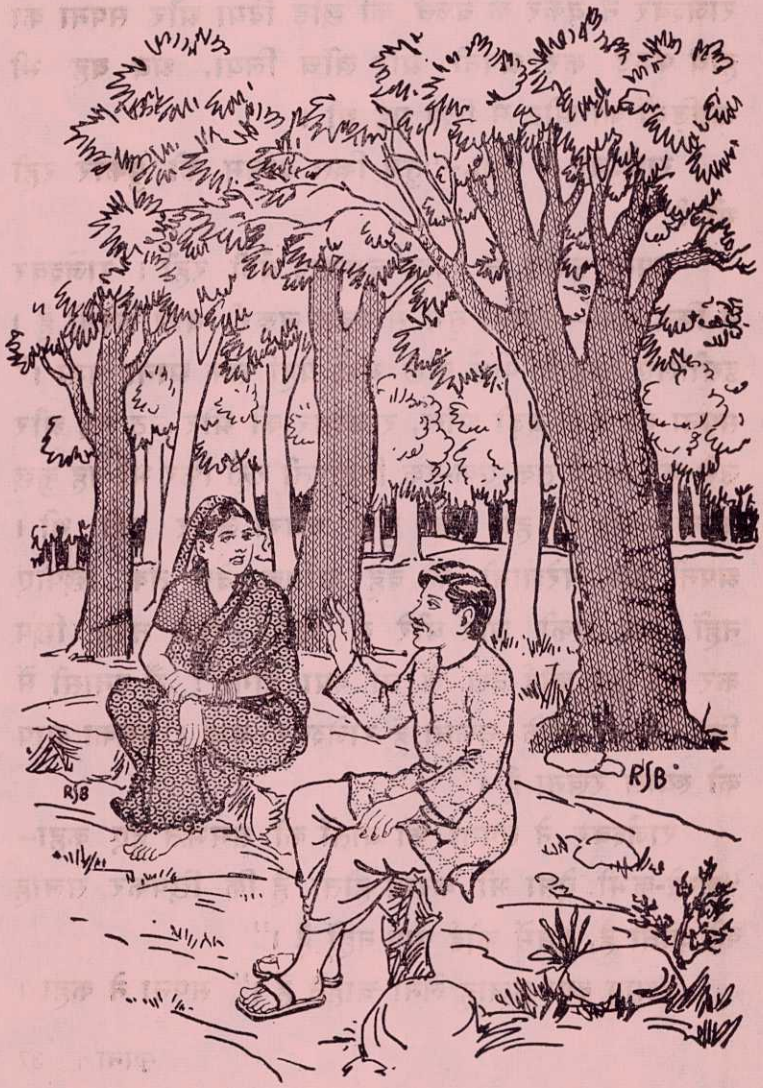

मुसीबत खड़ी कर दूंगी। यह भला कैसे हो सकता है ?" सपना ने राजेश्वर को देखते हुए कहा।

राजेश्वर भी सपना को देखने लगा। किन्तु जल्दी ही बोला–"सपना ! पढ़ाई-लिखाई से ही सब बातें नहीं आ जातीं। तुम मेरे साथ रहकर सब कुछ पढ़-लिख जाओगी। यदि ठीक ढंग का साथी मिल जाए, तो जिन्दगी की सभी कमियां पूरी हो जाती हैं। जो खूबियां तुम में हैं, वे मुझे बहुत पसन्द हैं।"

सपना फिर एक बार अचकचा गई। वह समझ गई कि राजेश्वर उससे क्यों और क्या चाह रहा है। जैसे कोई बड़े तूफान के डर से सिहर जाता है वैसे ही सपना भी कांप उठी। फिर भी हिम्मत करके बोली–"मेरे भाग्य में आपका साथ देना बदा होता तो मैं हरिजन परिवार में जन्म नहीं लेती। राजेश्वर बाबू, आप इस विचार को छोड़ दें। यह कभी नहीं हो सकेगा।"

"सपना, यह होकर रहेगा, तुम यह बताओ कि मैं तुम्हें पसन्द हूं या नहीं ?.....

तुम मेरे साथ शादी करोगी या नहीं ?" राजेश्वर ने दो टूक बातें कहीं। .....

सपना चुप हो गई, एकाएक वह क्या जवाब दे? लड़कियां अपनी पसन्द और नापसन्द की बातें बड़ी मुश्किल से कह पाती हैं। इसीलिए वह नीचे एकदम सिर झुकाए कुछ सोचती बैठी रही।

राजेश्वर सपना से जवाब चाहता था। उसकी मर्जी जानना चाहता था। बेसुध हो रही सपना की गहरी चुप्पी

के कारण वह फिर बोला –"जरूरी नहीं है कि तुम मुझे पसन्द करो। डरने की कोई बात नहीं है। तुम्हें अपने मन की बात एकदम साफ साफ कहनी चाहिए।"

सपना ने राजेश्वर की ओर देखा और कहा–"राजेश्वर बाबू, भला कौन ऐसी लड़की होगी जो आपको पसन्द नहीं करेगी। आप तो ऐसी बातें कर रहे हैं जैसे आपको यह पता ही न हो कि मेरा जन्म एक हरिजन परिवार में हुआ है जिन्हें लोग छूते भी नहीं हैं, कुएं से पानी नहीं भरने देते। उसी से आप शादी करेंगे ? मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा है।"

"बार बार तुम अपने अछूत होने की बात क्यों कह रही हो? क्या मैं जानता नहीं हूं कि तुम क्या हो मुझे दूसरों की बातों से कोई मतलब नहीं है। मैं तुम्हारी तरह नहीं सोचता हूं। तुमको गांव वालों का डर है, इसीलिए तुम हर समय अपनी दीनता की बात करती हो। कोई कारण नहीं है कि तुम मुझ पर विश्वास न करो। बहुत सोच समझकर ही मैंने यह फैसला किया है।" राजेश्वर ने सपना को समझाते हुए यह कहा। सपना ने कहा–"मेरे साथ ब्याह करने की चर्चा आप ने घर में किसी से की है ?"

राजेश्वर ने कहा–"घर में चर्चा करने से कोई फायदा नहीं होगा। उल्टे एक तूफान खड़ा हो जाएगा। मैंने अपने आप से जरूर कई बार पूछा है और हमेशा वहां से तुम्हारे लिए ही जवाब मिलता रहा है" अपने सीने पर हाथ रखते हुए कहा। सपना ने कहा–"आप बहुत बड़ी बात करने जा रहे हैं। मैं अपने आप को बड़ी भाग्यवान

समझ रही हूं। फिर भी इसके लिए सोचने-समझने का समय चाहिए। इतनी जल्दी न कीजिए।"

राजेश्वर ने कहा—"मैंने जल्दबाजी में आज ही यह फैसला नहीं किया है। बहुत दिनों से लगभग दस वर्ष पहले ही जब मैं कालेज में पढ़ता था तभी से मेरे दिमाग में यह बात जम गई थी कि यदि मैं शादी करूंगा तो किसी हरिजन लड़की से। अब समय आ गया है क्योंकि मुझे वैसी लड़की भी मिल गई है।"

सपना ने कहा—"मुझ जैसी गंवार के साथ रहकर आपको सुख नहीं मिलेगा। न तो मैं पढ़ी-लिखी हूं, न मुझे शहरी रहन-सहन का पता है। फिर आप क्यों मेरे साथ शादी करना चाहते हैं?"

राजेश्वर ने कहा—"कुछ बातें ऐसी हैं जो कही नहीं जा सकतीं। एक अनपढ़ पत्थर को छेनी और हथौड़ी की सहायता से जिस तरह एक सुन्दर मूर्ति में बदला जा सकता है उसी तरह मैं भी तुम्हें प्यार और हमदर्दी से सब कुछ सिखा दूंगा। तुम इन सब बातों की परवाह न करो। मेरा साथ दो, यही मेरी खुशी है।"

राजेश्वर की बातें सुनकर क्षण भर सपना चुप रही। इसके बाद उसने उसके सीने में अपना सिर छिपा लिया।

ठाकुर शत्रुदमन सिंह की बैठक में पनासी की दोनों बड़ी जातियों के लोग जमा हुए थे। सब की आंखें रघुनन्दन के आने के इन्तजार में थीं, काफी समय बीत जाने पर

भी जब रघुनन्दन नहीं आए तो एक आदमी उन के घर पर बुलाने गया। किन्तु रघुनन्दन सुबह-सवेरे ही एक दूसरे गांव, जानबूझ कर चले गये थे। मलुआ व उसकी लड़की सपना के कारण वे अपने घर को इस तरह बरबाद करना नहीं चाहते थे। यद्यपि उनका मन साफ नहीं था और वे भी हरिजनों को दबा कर रखने के पक्ष में थे। फिर भी वे अपनी गृहस्थी को केवल इसी कारण तोड़ना भी नहीं चाहते थे। यही कारण था कि गांव की पंचायत के पहले ही वे दूसरे गांव में चले गए थे।

इधर लोगों में तरह-तरह की चर्चाएं फैल रही थीं। एकत्र लोगों व ठाकुर शत्रुदमन सिंह को रघुनन्दन का इस तरह चला जाना अच्छा नहीं लगा। ठाकुर साहब ने कहा—"इस तरह फैसला कैसे हो सकता है जबकि रघुनन्दन इस पंचायत में नहीं है।"

जोखा सिंह ने कहा, "रघुनन्दन का लड़का राजेश्वर आजकल गांव में ही है। उसे बुला लिया जाए, या उसके भाई परसू को।"

ठाकुर साहब ने कहा, "राजेश्वर, तो शहर में पढ़-लिख कर भ्रष्ट हो गया है। वह तो कहता था कि मलुआ और उसकी लड़की को गांव से निकालने की बात नहीं करनी चाहिए। यह अन्याय है और न जाने क्या-क्या बक-झक कर रहा था।"

रघुनन्दन के बड़े काका मुकुन्दी भी पंचायत में थे। किसी कारण से मुकुन्दी और रघुनन्दन की अनबन चली आ रही थी। उन्होंने बदला लेने की गरज से कहा—

"पंचायत के सामने राजेश्वर को बुला लिया जाये, उसकी बातें हम लोग भी सुनें।"

पंचायत के एक दो लोगों ने हां में हां मिलाई। शीघ्र ही एक आदमी राजेश्वर को बुलाने के लिए दौड़ा दिया गया।

राजेश्वर के आते ही लोगों की खिचड़ी पकनी बन्द हो गई। गांव के सभी लोग जानते थे कि राजेश्वर बहुत पढ़ा-लिखा है और नेतागिरी भी करता है। इसीलिए एकदम सीधे उससे बात करने की हिम्मत किसी को नहीं पड़ रही थी। राजेश्वर भी समझ गया था कि अपने आप को ऊंची जाति का कहने वाले ये नासमझ मुट्ठी-भर लोग क्या कहना और करना चाहते हैं।

ठाकुर साहब ने पहले मुकुन्दी की तरफ इशारा किया, जिसका मतलब था कि अब बात शुरू की जाए। मुकुन्दी ने कहा–"बचुआ, सुना है मलुआ मोची को गांव से निकाले जाने के तुम खिलाफ हो ? यह हम लोगों की इज्जत का सवाल है।"

"बाबाजी मलुआ को आप लोग गांव से क्यों निकालना चाहते हैं ?" राजेश्वर ने प्रश्न किया।

"इसलिए कि उसकी लड़की ने इस गांव का नियम भंग किया है। पुरखों के समय से चली आ रही प्रथा को तोड़ा है।" जोखा सिंह ने, जोकि बड़े बातूनी समझे जाते थे, राजेश्वर को उत्तर दिया।

"आप लोग साफ साफ क्यों नहीं कहते कि मलुआ तथा उसकी लड़की ने क्या अपराध किया है ? कौन सा नियम

तोड़ा और किस किस प्रथा को भंग किया है ?"

ठाकुर शत्रुदमन सिंह ने चतुराई से तपाक उत्तर दिया– "मलुआ की लड़की ने तुम्हारे घर का गोबर उठाने से इनकार किया है, दूसरे भी ऐसा ही कर सकते हैं, यही उसका अपराध है।"

राजेश्वर ने कहा–"काका साहब, मलुआ की लड़की ने गोबर हमारे घर का उठाने से इन्कार किया। हम लोगों को उससे कोई शिकायत नहीं है, फिर आप लोग पंचायत क्यों बैठा रहे हैं। जब आप के यहां कोई ऐसी घटना होगी तो उस पर आप पंचायत बैठाना और जो दिल में आए करना।"

मुकुन्दी को यह राजेश्वर की हेकड़ी अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कहा–"तुम्हारा परिवार भी इसी गांव में रहता है। गांव की इज्जत का सवाल है। इसीलिए हम लोग यहां पर आए हैं। इसके पहले कि मलुआ की लड़की ने जो जहर बोया है, वह दूसरे लोगों तक पहुंचे, उसकी जड़ को ही काट दिया जाए।"

"आप लोग मुझसे क्या चाहते हैं ?" राजेश्वर ने सीधा प्रश्न किया।

"तुम अपनी जमीन से मलुआ को हटा दो। हम लोगों की राय है कि मलुआ तथा उसकी बेटी गांव को छोड़ दें।

"आप सब मुझे माफ करें। मलुआ का घर जिस जमीन पर बना हुआ है, भले ही वह कभी किसी समय हमारे परिवार की जमीन रही हो, किन्तु आज वह जमीन मलुआ की

है, हमारी नहीं है। अगर मान भी लिया जाए कि मलुआ

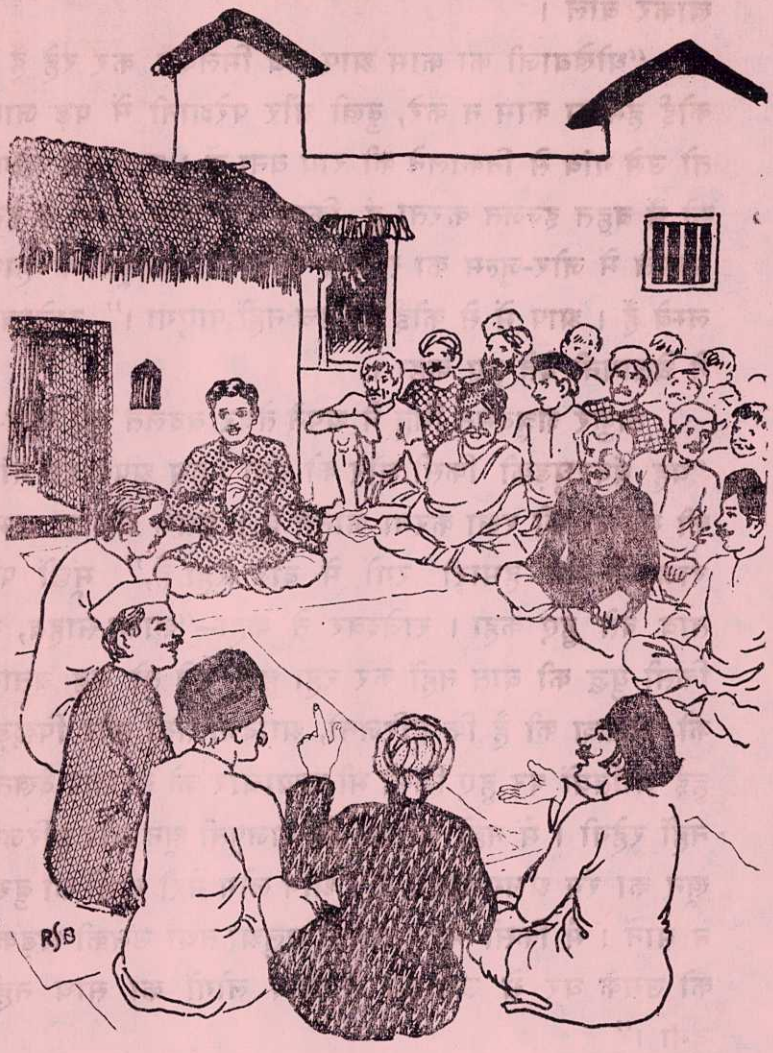

हमारी जमीन पर ही बसा हुआ है, जैसा आप सब समझ रहे हैं तो मैं धोखे से भी उसको निकालने में आप लोगों का साथ नहीं दूंगा।" राजेश्वर ने सख्ती से उत्तर दिया।

"वह गांव के साथ धोखेबाजी होगी।" जोखासिंह ताव खाकर बोले।

"धोखेबाजी का काम आप सब मिलकर कर रहे हैं। कोई हमारा काम न करे, दुखी और परेशानी में पड़ जाए तो उसे गांव से निकालने की राय बना लें। आप सब लोगों की मैं बहुत इज्जत करता हूं किन्तु यदि आप लोगों ने इस मामले में जोर-जुल्म का सहारा लिया तो कानून के हाथ लम्बे हैं। आप में से कोई भी बच नहीं पाएगा।" राजेश्वर ने चेतावनी देते हुए कहा।

ठाकुर शत्रुदमन सिंह ने अपने तेवर बदलते हुए कहा—"यह बंदरघुड़की किसी और को देना। हम अपने इस गांव की मर्यादा की रक्षा करना जानते हैं। इसके अलावा अभी राजपूती खून हमारी रगों में दौड़ रहा है," मूंछों पर ताव देते हुए कहा। राजेश्वर ने कहा—"काका साहब, मैं किसी युद्ध की बात नहीं कर रहा हूं। मैंने तो यह बताने की कोशिश की है कि हरिजनों, आदिवासियों और पिछड़ी हुई जातियों पर हुए किसी भी अत्याचार को सरकार देखती नहीं रहेगी। मैं नहीं जानता कि राजपूती खून और हरिजन खून का रंग अलग-अलग है। आप लोग मेरी बातों का बुरा न मानें। मैं किसी भी हालत में मलुआ तथा उसकी लड़की को उसके घर से उजाड़ने में आप लोगों का साथ नहीं दूंगा।"

ठाकुर शत्रुदमन सिंह ने चट मुकुन्दी की तरफ देखा। मुकुन्दी ने जोखासिंह की तरफ ताका। जोखासिंह को कुछ बोलना चाहिए, क्योंकि दूसरे कुछ भी बोल नहीं पा रहे थे।

इसलिए उन्होंने कहा–"सुना है मलुआ की लड़की तुम्हारे खेत के कुएं से पानी भरने लगी है। तुम्हीं ने उसको पानी भरने को कहा है।"

राजेश्वर इस तरह की बेमतलब की बातों से ऊब गया था, इसलिए उसने कहा–"यह मेरा अपना निजी मामला है। आप लोगों को इससे कोई लेना देना नहीं है, मैं पानी भरने दूं या नहीं भरने दूं।"

अन्त में ठाकुर साहब ने कहा–"बचुआ बड़ी बोल न बोलो, हम लोग भी इसी गांव में रहते हैं और एक दूसरे से काम पड़ता ही रहता है।"

राजेश्वर ने विनीत भाव से कहा—"मैं किसी तरह के अन्याय में आप लोगों का साथ नहीं दूंगा, वैसे मैं आपका सेवक हूं। आप लोगों के सामने बड़ी बात बोलने का साहस मैं कभी भी नहीं कर सकता। आप सब हमारे बुजुर्ग हैं। मैं आपका आदर करता हूं।"

इतना कहने के बाद राजेश्वर सब को प्रणाम कर के पंचायत से उठकर चला गया। राजेश्वर के जाने के बाद इधर-उधर की बातें होती रहीं। कोई फैसला नहीं हुआ।

पनासी में जो हलचल चल रही थी उसका हल मलुआ ने खोज लिया। वह पचामा गांव से अपने बच्चों को पालने-पोसने के लिए एक औरत ले आया। अब सपना को अपने भाई बहन की देख-रेख से छुट्टी मिल गई तो एक दिन सुबह

वह रघुनन्दन के यहां जानवरों का गोबर उठाने गई। किन्तु उसने देखा कि राजेश्वर और उसकी मां सफाई कर रहे हैं। उसने कहा—"काकी आप बाहर आ जाओ, मैं अब रोजाना सफाई करने आया करूंगी।"

राजेश्वर और उसकी मां सपना को देखकर चौंक पड़े। राजेश्वर की मां ने कहा—"तुम बच्चों को छोड़कर क्यों चली आई ?"

सपना ने हँसते हुए कहा—"मेरा बापू नई मां ले आया है, अब बच्चों को वही देखा करेगी। मैं बाहर का काम किया करूँगी ?"

राजेश्वर ने अपनी मां को कहा—"तुम जाओ मां। चाय बना दो, और हां सपना को भी चाय देना।"

सपना ने कहा—"मैं चाय नहीं पीती हूं।" और काम में जुट गई।

राजेश्वर सपना के आगे-पीछे डोलता रहा। सपना मना करती रही कि काकी क्या सोचेगी। आप चले जाओ। किन्तु वह अपनी जगह से हटा नहीं। उसका जी चाहता था कि सपना उससे बातें करे। सपना ने राजेश्वर को समझाते हुए कहा—"यहां बात करने का न तो समय है और न ही ठीक जगह। लोग-बाग आ-जा रहे हैं।" डरते, सहमते हुए सपना ने कहा।

अन्त में राजेश्वर दोपहर को जंगल में मिलने का वायदा कराकर चाय पीने चल पड़ा।

राजेश्वर की मां चाय बना रही थी। राजेश्वर और सपना अकेले 'सार' में हैं उसे यह पता था। दोनों चुपके छिपे

कुछ बातें भी कर रहे थे। अकेले में जवान लड़का और लड़की मिलते हैं तो चुपके-चुपके दोनों की जवानी उन्हें ललकारती है। इस बात को राजेश्वर की मां भी खूब समझती थी। अनुभवी औरत थी इसीलिए अचानक वे मन ही मन सोचने लगी कि अब राजेश्वर का ब्याह हो ही जाना चाहिए। लेकिन कोई लड़की उसको पसन्द ही नहीं आती थी। कई रिश्ते अब तक आ चुके थे और उन सभी को कुछ न कुछ बेमेल बताकर राजेश इनकार कर चुका था। इसी तरह की बातें उसके मन में आ रही थीं। इतने में राजेश्वर आ गया। मां ने पूछा—"सपना चली गई ?"

"नहीं तो, वह अभी उपले थाप रही है।" राजेश्वर ने कहा।

चाय छानकर जब मां ने राजेश्वर को दी तो राजेश्वर ने सपना को चाय देने की बात नहीं कही इसलिए मां ने पूछा—"सपना को चाय नहीं दोगे ?"

"वह चाय नहीं पीती है।" राजेश्वर ने उत्तर दिया।

राजेश्वर की मां ने कहा—"बचुआ, तू मुझे कब तक अकेला रखेगा। मैं अब चाहती हूं कि इस घर में बहू आ जाए और वह इस गृहस्थी को सम्हाले।" शहर में भी तुझे तकलीफ होती होगी, तू कब तक इधर-उधर का खाकर पेट भरता रहेगा।"

"मां, अगर बहू आएगी तो वह इलाहाबाद में रहेगी। तुम्हें तो कोई फायदा होगा नहीं। यह जरूर होगा कि वह तुझसे मुझे अलग जरूर कर देगी।" राजेश्वर अपनी मां से दुलार दिखाते हुए लिपट गया।

"कब तक तू बच्चा बना रहेगा, क्या तू मेरी इच्छा पूरी नहीं करेगा ?" मां ने राजेश्वर के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"कोई लड़की देखो, जो तुम्हें तुम्हारे कामों में सहायता कर सके, मैं वैसी ही लड़की से तेरा ब्याह करूंगी।" सहज भाव से मां ने राजेश्वर ने कहा।

"अब तक चार-पांच रिश्ते आ चुके हैं। तुझे कोई पसन्द ही नहीं आती तो क्या किया जाए ?" उदाहरण देती हुई मां ने कहा।

"मां कोई सपना जैसी लड़की तलाशो न ?" हँसते हुए राजेश्वर ने कहा।

राजेश्वर की मां को जैसे किसी ने सुई चुभा दी हो। वे चौंक गईं। फिर भी अपने को संभालते हुए कहा—"यही तो भगवान की माया है कि एक जैसी सूरत उसने नहीं बनाई है। फिर भी बैकुण्ठनगर के दुबे जी की लड़की आज भी खाली है। कहो तो बातचीत आगे चलाई जाए।"

'नहीं, नहीं, मां वह मुझे पसन्द नहीं है। तुम्हें वह सुखी नहीं रख सकेगी।" राजेश्वर ने बात टालते हुए कहा।

"तू अपने सुख की बात कर, ब्याह तुझे करना है। मेरे सुख की तुझे क्या पड़ी है ?" मां ने कहा, "अगर मुझे अपने सुखकी चाह होती तो अभी तक कभी का ब्याह कर चुका होता। मैं तो उसी के साथ शादी करूंगा जो मेरी मां को भी आराम दे सके, उसकी भी इज्जत करे।" राजेश्वर ने कहा।

"तब तो ठीक है, बैठे रहो कुंआरे। जिसे हम पसन्द

करते हैं, उसे तू पसन्द नहीं करता। और जो तेरी पसन्द है वह मिल नहीं पा रही है।" राजेश्वर की मां ने उदास होकर कहा।

"मिलेगी मां, अब देरी नहीं है, तू इतनी जल्दी न कर। जिन्दगी का मामला है। कोई ऐसी-वैसी लड़की आ गई तो तुझे और मुझे दोनों को नाकों चना चबवा देगी। फिर बस तुम कोसा करोगी, कभी मुझे कभी अपनी बहू को।" हंसते हुए राजेश्वर ने कहा और उठकर बाहर की ओर चला गया।

राजेश्वर दोपहर के समय सपना से मिलने जंगल की ओर चल पड़ा। इधर-उधर ढूंढने के बाद उसकी बकरियां दिखाई पड़ीं। सपना ने पहुंचते ही एक ऐसी जगह तलाश कर ली थी, जहां से वे दोनों, बाहर के लोगों को देख सकते थे, किन्तु उन्हें कोई नहीं देख सकता था। सपना उसी तरफ इशारा करके राजेश्वर को ले गई।

बैठते ही सपना ने कहा—"आप सुबह जब मेरे पास थे तो काकी क्या कह रही थी ?"

राजेश्वर ने कहा—"मां कह रही थी कि अब जल्दी ब्याह कर लो।"

"ठीक तो कहती है। अब आप को देरी नहीं करनी चाहिए।" सपना ने ठिठोली करते हुए कहा।

"हां, एक लड़की देखी तो है। बात-चीत भी चल रही है।" राजेश्वर ने कहा।

"कहां देखी है ? कैसी है वह लड़की ? क्या नाम है उसका" सपना ने कहा ।

"बहुत अच्छी है । तुम देखोगी तो खुश हो जाओगी । आज बड़े सवेरे ही हमारे पड़ोस में एक परिवार आया है, उन्हीं के साथ वह लड़की भी है । लड़की बड़ी चुलबुली है ।" राजेश्वर ने सपना की ओर देखते हुए कहा ।

"बहुत सवेरे पड़ोस में आए हैं ।" यह सुनते ही सपना का दिल बैठ गया । उसने सचमुच समझ लिया कि कोई लड़की आई हुई है । इसीलिए बुझे हुए दिल से उसने कहा, "कब तक ब्याह होगा !" कहकर सपना राजेश्वर से कुछ दूर हट कर बैठने लगी ।

"आज लगन की कोई तारीख निकाली जाएगी । मैं समझता हूं अब देरी नहीं होगी ।" राजेश्वर मन ही मन खुश हो रहा था ।

सपना के सीने पर सांप लोट गया । उसके सामने अंधेरा-सा छा गया । बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हालते हुए बोली—"राजेश्वर बाबू ! आपको इस तरह छिप-छिप कर मुझसे मिलने नहीं आना चाहिए । आपको अपनी होने वाली बहू का ख्याल करना चाहिए ।" ऐसा लगता था कि सपना अब रो देगी । उसके सारे सपने टूट कर अब बिखर रहे थे ।

"हां-हां, उसका ख्याल मुझे बहुत है । जब से उसे देखा है, बस यही चाह रहा हूं कि कितनी जल्दी से जल्दी शादी हो जाए । तुमसे तो सलाह लेने आया हूं कि तुम्हारी राय क्या है ?" राजेश्वर सपना की बेचैनी को अंदाज रहा था ।

जैसे कोई जले पर नमक छिड़क दे, बस ऐसी ही हालत सपना की थी। इसी बीच राजेश्वर सपना की ओर और खिसक कर, उससे सट कर बैठ गया, सपना ने फिर खिसक कर, हटकर अपने और राजेश्वर के बीच कुछ फासला कर लिया। सपना चाहती थी कि वह उठ कर भाग जाए। अन्त में उसने कहा—

"मैं कौन होती हूं आप को राय देने वाली। ब्याह आपको करना है। आप करें मुझे अब जाना है 'मेरी बकरियां' इधर-उधर चली गई होंगी।" उठने की कोशिश करते हुए सपना ने कहा—

राजेश्वर अब सपना को अधिक सताना नहीं चाहता था। इसीलिए उसने कहा–"जाने के पहले लगन की तारीख तो बताए जाओ।" इतना कहकर राजेश्वर फूट कर हंस पड़ा। सपना जहां थी वहां ही रही। वह कुछ समझ न सकी, लगन की तारीख से उसका क्या लेना-देना है। फिर भी उसका मन तो यह चाहता ही था कि राजेश्वर जो कह रहा है वह झूठ हो। इसीलिए उसने कहा–"मैं लगन की तारीख-वारीख क्या जानूं।" "तुम नहीं जानोगी तो फिर कौन जानेगा ? शादी तो तुमसे ही होगी !" इतना कहने के बाद राजेश्वर ने सपना को अपनी ओर खींच लिया। सपना की आंखें भर आईं। यह खुशी के आंसू थे। कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद बोली– "क्या आप यह सोचकर आए थे कि मुझे रुलाएंगे !"

"नहीं यह तो बातों-बातों में ही हो गया। खैर, छोड़ो इन बातों को। आज मैंने अपनी मां से कह दिया कि मुझे

सपना जैसी ही लड़की चाहिए।"

"कल शाम को बाबा प्रेमानन्द के यहां जरूर मिलना। परसों सुबह ही मैं यहाँ से चला जाऊंगा। मेरा वहां जाना बहुत जरूरी है।' सपना की आंखें फिर भर आईं। प्रेम में रोना सहज हो जाता है। राजेश्वर ने सपना की आंखों के आंसू पोंछे और कहा— "इसी तरह अगर तुम हिम्मत हार जाओगी तो कैसे काम चलेगा। तुम मेरी हो चुकी हो और अब दुनिया की कोई भी ताकत तुमको मुझसे नहीं छीन सकती।"

दोनों वहां से उठकर बाहर आ गए। राजेश्वर अपने घर की तरफ चल पड़ा और सपना अपनी बकरियों की देख-रेख करने लगी।

दिन ढलते ही राजेश्वर, बाबा प्रेमानन्द के पास पहुंच गया। सपना वहां पहले से ही मौजूद थी। बाबा जी को प्रणाम करते हुए राजेश्वर ने कहा–"मैं एक-दो दिन में गाँव से वापस इलाहाबाद चला जाऊंगा। मैं सपना के साथ ब्याह करूंगा, आपका आशीर्वाद चाहिए।"

सपना को ऐसी आशा नहीं थी कि राजेश्वर सीधे ही बाबा से ब्याह की चर्चा कर देगा। वह शरमा गई, किन्तु चुप रही। बाबा कभी सपना को देखते और कभी राजेश्वर को। उन्होंने हंसते हुए कहा—"अब नया सवेरा जरूर आएगा।" मेरा आशीर्वाद है कि इस सवेरे के प्रकाश में तुम दोनों अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहो और दूसरों को

भी रास्ता दिखाओ।" बाबा ने प्यार से दोनों के सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

राजेश्वर ने कहा—"सपना के मन में कुछ शंकाएं हो सकती हैं गांव वालों की बातों के कारण। किन्तु मैं आपके सामने वायदा करता हूं कि सपना का हाथ कभी भी नहीं छोड़ूंगा। ऐसा ही वायदा सपना को भी करना चाहिए।"

सपना सिर झुकाए हुए बोली—"आपकी बातों की रक्षा मैं प्राण रहते हुए करूंगी।" इतना कह कर वह बाबा के पैरों में गिर कर रोने लगी।

बाबा ने उसको बड़े प्यार से उठाया, दुलारा, और आंसू पोंछते हुए कहा—"जो रास्ता तुम लोगों ने चुना है वह सीधा सपाट नहीं है। बड़ी-बड़ी मुश्किलें आएंगी, कष्ट होगा। इन पीड़ाओं को झेलने के बाद ही चैन की सांस ले सकोगे।" बाबा के पास गांव के दूसरे लोग भी आ जा रहे थे, इसीलिए राजेश्वर वापस घर की तरफ चल पड़ा और सपना इधर-उधर की सफाई करने लगी।

राजेश्वर इलाहाबाद चला गया। जल्दी ही विधान सभा के चुनाव होने वाले थे। 'भेदभाव मिटाओ सभा' की तरफ से राजेश्वर की उम्मीदवारी पक्की हो गई थी। पहली ही बार राजेश्वर को चुनाव के लिए तैयारी करनी थी। इसीलिये वह पूरी ताकत से उसमें जुट गया। चुनाव की सरगर्मी जैसे-जैसे बढ़ती जा रही थी राजेश्वर भी उसी तरह रात-दिन एक कर रहा था। सपना को भुला नहीं दिया था; किन्तु

इतनी फुर्सत नहीं थी कि वह उसकी कुछ खोज-खबर लेता।

इधर पनासी में परसू और बुधई सिंह बुरी तरह सपना के पीछे पड़े हुए थे। गांव में सपना और राजेश्वर के प्रेम की चर्चा भी फैल चुकी थी। कहने का मतलब यह कि एक बार सपना फिर से गांव वालों के लिए सिर-दर्द बन गई। सपना पर यह दोष लगाया जाने लगा कि वह गांव के लड़कों को खराब कर रही है। बदचलनी का पाप भी उस पर कुछ लोग थोपने लगे थे। अपने चारों तरफ गन्दी बातों को होते देख, सपना ने कुछ दिनों तक तो इन बातों की परवाह नहीं की, लेकिन जब घर में उसकी सौतेली मां और बाहर की कुछ औरतों ने टोका-टाकी शुरू कर दी तो सपना बेचारी घबरा गई। दो महीने हो गए थे। राजेश्वर का कोई अता-पता नहीं था। मलुआ पर जोर पड़ने लगा कि वह सपना की शादी कर दे। इधर सपना किसी भी हालत में ब्याह के लिए राजी नहीं थी। मामला उलझता जा रहा था। सुबह-शाम लोगों में बस एक ही चर्चा थी—सपना की। रोज नए-नए किस्से घड़े जाते, और फिर उनको गांव में फैलाया जाता। इस काम में बुधई सिंह और परसू पूरी ताकत से लगे हुए थे। दोनों की दाल जब सपना के सामने नहीं गली तो वे बुराई में जुट गए।

एक दिन गांव में इसी बात को लेकर फिर से पंचायत जुड़ी। इस बार पंचायत के अगुआ थे—मुकुन्दी। ठाकुर शत्रुदमन सिंह मन ही मन समझ रहे थे कि रघुनन्दन से

झगड़ा होने के कारण मुकुन्दी गांव में उन्हें नीचा दिखाना चाहते हैं। फिर भी वे उनका साथ दे रहे थे क्योंकि ठाकुर शत्रुदमन सिंह के गलत कामों का मुकुन्दी ने अनेक बार साथ दिया था। इसलिये अब उनको भी मुकुन्दी का साथ देना था। पंचायत में मलुआ और सपना दोनों को बुलाया गया। वैसे रघुनन्दन से बदला लेना मुकुन्दी के लिए बहुत जरूरी था। ठाकुर शत्रुदमन सिंह ने कहा–

"मलुआ तेरी वजह से बार-बार हमारे गांव में कुछ न कुछ बुरी बातें ही होती रहती हैं। तू अपनी लड़की को, जितनी जल्दी हो सके, चाहे उसका ब्याह करके या जैसे भी हो, इस गांव से हटा दे। या तू ही गांव छोड़ कर यहां से कहीं और चला जा।"

मलुआ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और कहने लगा, "सरकार आप सब लोग हमारे माई-बाप हैं, हम गांव छोड़ कर कहां जाएं ? मेरी लड़की ने कौन-सा पाप किया है, जिससे मुझे गांव से चले जाने के लिए कहा जा रहा है ?"

"तेरी लड़की गांव के लड़कों को खराब कर रही है।" जोखई सिंह ने जोश में आकर कहा।

अपने ऊपर इस तरह का लांछन लगते हुए सुनकर सपना एकदम तड़प उठी। उसने कहा–"काका तुम्हारा लड़का बुधई सिंह मेरा पीछा करता है। मुझे रुपये दिखाता है, आप लोग खुद सोचें कि मैं कैसे, किसको खराब कर रही हूं ?" सपना की बात सुनते ही बुधई सिंह चुपके से वहां से खिसक गया। कुछ लोगों ने उसको जाते हुए देखा। जोखई सिंह की जुबान बन्द हो गई।

सपना ने आगे कहा—"हम गरीब हैं। आप लोगों की नजरों में नीच भी हैं। क्या इसीलिए बुराई भी हमीं लोग कर सकते हैं ? आप के लड़के नहीं ?"

मुकुन्दी ने रघुनन्दन पर करारी चोट करते हुए कहा—"सुना है, तुम रघुनन्दन के लड़के राजेश्वर के साथ ब्याह करने वाली हो। राजेश्वर के घर वालों की 'हां' भी हो गई है।"

इसके पहले कि सपना कुछ बोलती, रघुनन्दन तिलमिलाकर बोल उठे—"काका जबान सम्हालकर निकालना। मैं तुम्हें जानता हूं यह कीचड़ क्यों उछाली जा रही है। तुम बिरादरी से बाहर क्यों हुए हो ? क्या पंचायत को बता सकोगे ? दस साल तक तुम अपने खेत के घर पर किस जाति की औरत को रखे रहे ?"

मुकुन्दी की बोलती बन्द हो गई। उसने ठाकुर साहब की ओर घूरकर देखा। ठाकुर साहब ने बात को बदलते हुए कहा—"यहां हम लोग किसी परिवार के झगड़े को लेकर नहीं बैठे हैं। बात सपना की है। यदि मलुआ पन्द्रह दिन के अन्दर अपनी लड़की का ब्याह करके गांव से बाहर नहीं करता तो मलुआ को इस गांव से निकाल दिया जाएगा। आप सब की क्या राय है ?" पंचों की तरफ देखते हुए ठाकुर साहब ने कहा। सभी ने कहा—"ठीक है, ठीक है।"

मुकुन्दी और रघुनन्दन में झड़पें होती रही। गड़े मुर्दे उखड़ते रहे। जो लोग दोनों का आनन्द ले रहे थे वे दोनों की बातों को हंस-हंसकर बढ़ावा दे रहे थे। धीरे-धीरे पंचायत के लोग अपने-अपने घरों को चले गये।

मलुआ ने सपना को घर में बन्द कर दिया। उसका बाहर निकलना भी बन्द हो गया। बकरियों को बेच दिया गया और राजापुर में उसकी शादी भी ठीक कर दी गयी। सपना अब बेबस हो चुकी थी। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। उधर ब्याह की तैयारियां होने लगीं। शादी के गीत गाए जाने लगे। किन्तु सपना के लिये यह शादी मौत के बराबर थी। बस, रात-दिन वह राजेश्वर की ही बात सोचती रहती।

बारात आने में अभी तीन दिन बाकी थे। उस दिन सुबह चार बजे जब घर के सभी लोग सो रहे थे तो सपना चुपके से उठी और बाहर चली गई। फिर लौट कर वह घर नहीं आई। सवेरा होते-होते ही कोहराम मच गया। सपना भाग गई ! सपना भाग गई ! ! गांव में एक बार फिर से खबरों का बाजार गरम हो गया। मलुआ चारों तरफ पागलों की तरह भाग-दौड़ रहा था। किन्तु वह सपना को न पा सका। सपना उससे दूर जा चुकी थी। निराश होकर उसने राजापुर खबर भेज दी कि अब ब्याह नहीं होगा और अपने बाल-बच्चों को लेकर गांव छोड़कर वह तेउथर चला गया।

सपना इलाहाबाद पहुंच गई। सुबह तड़के चार-पांच मील पैदल चलकर वह चाकघाट से पहली बस में बैठकर इलाहाबाद आ गई। पहली बार उसने इतना बड़ा शहर देखा था। न कोई जान थी न ही कोई पहचान। उसके आंचल में बंधा हुआ केवल राजेश्वर का पता था। जीरो

रोड के बस अड्डे पर जब वह उतरी तो उसे कुछ समझ नहीं आया कि किससे पता पूछे। रिक्शे वाले जरूर बिना बुलाए ही आ जा रहे थे और सवारियों को भर-भर कर ला-ले जा रहे थे। थोड़ी ही देर में सारी भीड़ छंट गई। कुछ गिने-चुने लोग ही वहां रह गए। केवल एक छोटा-सा झोला हाथ में लिए सपना ही बेबस अकेले एक किनारे खड़ी थी। हाथ में पते वाला पर्चा लिए वह किसी से राजेश्वर का पता पूछना चाहती थी ! किन्तु हिम्मत नहीं पड़ रही थी। इतने में उसके पास से एक अधेड़ उम्र का आदमी निकला। सपना ने कहा—"बाबूजी ! इस कागज में लिखे हुए स्थान पर मुझे जाना है। मैं पहली ही बार शहर आई हूं। आप पढ़कर मुझे पता बता दें।"

अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने सपना की ओर गौर से देखा। देहात से आई हुई खूबसूरत लड़की के बारे में तरह-तरह की बातें उसके मन में आने लगीं, फिर सोचा, कौन झंझट में पड़े। उसने पर्चे को देख कर बताया—"कटरा, मकान नं० 110 में चली जाओ।"

कटरा, मकान नं० 110 रटती हुई सपना एक रिक्शे वाले के पास पहुंची। रिक्शा वाला भला था। उसने कहा—"बहन ! मकान तक पहुंचा दूंगा, तुम रिक्शे पर बैठ जाओ।"

सपना रिक्शे पर बैठकर कटरा मोहल्ले के लिए चल पड़ी। रिक्शे वाले ने पूछ-ताछ कर के मकान ढूंढ़ लिया। जिस मकान में सपना को उतरना था वहां बहुत सारी मोटरें, स्कूटर और साइकिलें खड़ी थीं। नेता लोग आ जा रहे थे। रिक्शे वाले को धोखा हुआ कि कहीं गलत मकान में तो

वह नहीं आ गया। उसने सपना के हाथ से पता लेकर उन्हीं आने-जाने वालों में से एक को दिखाया। पता पढ़ने वाले ने कहा—"राजेश्वर बाबू का तो यही मकान है। अब वह मिनिस्टर हो गए हैं। बोलो तुम को क्या काम है।"

रिक्शे वाले ने कहा—"मुझे नहीं, देहात से एक लड़की आई है, वह रिक्शे पर बैठी है और उनसे मिलना चाहती है।" इतना सुनते ही वह व्यक्ति पर्चा लेकर अन्दर चला गया।

राजेश्वर चुनाव जीत गया था। वह पढ़ा-लिखा था। ईमानदारी से काम करते हुए, वह सभी से मिलता-जुलता था। ऐसे होनहार युवक को मिनिस्टर का पद मिलने पर सभी को खुशी हुई। यहां तक कि विरोधी दल वाले भी राजेश्वर के मन्त्री पद पर आने से प्रसन्न थे। मन्त्री बने उसे तीन-चार ही दिन हुए थे। अब उसको पनासी की बड़ी याद भी आ रही थी, किन्तु मिलने-जुलने वालों का तांता लगा रहता था। नया-नया मन्त्री बना था, इसीलिए दिन और रात एक हो रहे थे। न ठीक से खाना, न ठीक से सोना। बस चाय के दौर चला करते थे। राजेश्वर ने अपने प्याले की चाय जैसे ही खत्म की कि उसी का लिखा हुआ पर्चा उसे थमा दिया गया। क्षण भर तक वह अपने हाथ के लिखे हुए पते को देखता रहा, तभी अचानक उसको सपना की याद आ गई। वह हड़बड़ा कर खड़ा हो गया। लोगों से बैठने का इशारा करके वह बाहर आया। रिक्शे पर खड़ा सपना को देख कर वह देखता ही रह गया। अब क्या करे? शीघ्र ही वह सपना के पास गया और कहा—

"इस दरवाजे से तुम अन्दर पहुंच जाओ।"—एक दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा।

सपना ने राजेश्वर को जिस रूप में देखा वह निराला ही था। सफेद खादी के कपड़ों में वह बहुत जच रहा था। सपना अन्दर जाकर रसोईघर के एक कोने में बैठ गई।

राजेश्वर मिलने वालों को जल्दी-जल्दी निपटा रहा था। अन्त में उसने कहा—"आज एक जरूरी बैठक में मुझे जाना है। आप लोगों से आज्ञा चाहूंगा।" कहते ही लोगों की भीड़ एक-एक कर छंट गई। भीड़ के चले जाने के बाद फौरन ही राजेश्वर ने अपने कुछ ऐसे साथियों को बुलवाया, जिन पर उसका पूरा भरोसा था। उनके आते ही उसने अपने और सपना के बारे में पूरी बातें बताईं और कहा—"ब्याह आज ही शाम को आर्यसमाज में होना चाहिए।"

जब सब लोग काम से चले गए तो राजेश्वर सपना के पास गया और उसके इस प्रकार अचानक आने की बात पूछी। सपना ने पहले परसू और बुधई सिंह की बदमाशी की चर्चा की और जब ये दोनों हार गये तो किस तरह उसकी गांव में बदनामी फैला दी गई। बाद में पंचायत ने कैसे उसके बापू को पन्द्रह दिन के अन्दर ब्याह कर देने अथवा तुरंत गांव छोड़ देने की धमकी दी। और अंत में उस ने यह भी बताया कि उसकी शादी जहां लगी थी वहां से बारात आने में तीन ही दिन बाकी थे, अब मेरा वहां से हटना जरूरी था। इसलिए तड़के घर से भाग कर चाक-घाट आई और वहां से बस से इलाहाबाद। अपनी बात खत्म करके सपना रोने लगी। राजेश्वर ने उसे चुप कराया

और कहा–"अब रोने के दिन बीत गए। आज शाम को हम दोनों की शादी है। अब तुम एक मिनिस्टर की पत्नी होने वाली हो।" प्यार से इतना कहकर राजेश्वर ने सपना से कहा–"अभी मैं तुम्हारे लिए सभी तरह के कपड़े मंगवाता हूं। तुम नहाओ, धोओ और खाना खाकर आराम करो। मुझे बहुत-सा काम करना है।" इतना कह कर राजेश्वर ने अपनी बैठक में आकर नौकर को बुलाया और सभी बातें समझा कर बाहर चला गया।

शाम के समय सपना और राजेश्वर की शादी हो गई। दूसरे दिन शादी की दावत में बड़े-बड़े नेताओं ने राजेश्वर को एक हरिजन लड़की से ब्याह करने पर बधाई दी। अखबारों में सुन्दर सपना और साहसी राजेश्वर की खूब बड़ी-बड़ी तस्वीरें छपीं। लोग एक ब्राह्मण लड़के की हिम्मत की तारीफ कर रहे थे। 'भेदभाव मिटाओ सभा' के अध्यक्ष ने खुद अपने ही घर से भेदभाव मिटाकर जनता के सामने एक आदर्श रखा। सपना का दिल खुशी से बांसों उछल रहा था। उसके लिए एक समझदार औरत रख दी गई जो उसे तौर-तरीके भी सिखाती और पढ़ना-लिखना भी।

सपना और राजेश्वर के ब्याह की खबर पनासी में भी फैल गई। रघुनन्दन के परिवार वालों को उन के भाई-बन्धु बुरा-भला कहने लगे और उन के साथ खान-पान का नाता तोड़ लिया। गांव के एक कोने से दूसरे कोने तक बदनामी की चर्चा ही सुनाई पड़ती थी। किन्तु जल्दी ही यह हवा थम

गई। राजेश्वर के मिनिस्टर होने की जैसे ही लोगों को खबर लगी, तो लोग दबी जुबान से कहने लगे 'जो होना था वह तो हो गया।' अब तो गांव की भलाई कैसे हो– इस तरह की बातें सोचनी चाहिएं।

राजेश्वर पनासी के रहने वालों की तकलीफों को पहले से ही भली-भाँति जानता था। उसने सबसे पहले गांव की सड़क बनवाई और शीघ्र ही तमसा नदी से पानी और बिजली, गांव तक पहुंचाने के लिए बड़ी-बड़ी मशीनें लगवा दीं। देखते ही देखते पनासी गांव की कायापलट हो गई। जगह-जगह पानी के नल लग गए। हरिजनों की बस्ती में भी नलों का जाल बिछ गया। बिजली की लाइन भी आसपास के दस-बारह गांवों में पहुंचा दी गई। जिधर देखो उसी तरफ राजेश्वर की जय-जयकार हो रही थी। 'हरिजन लड़की के साथ ब्राह्मण के लड़के की शादी' की बात को अब लोग भूलते जा रहे थे। मंत्री राजेश्वर से सभी लोग अधिक से अधिक लाभ अपने-अपने गांवों के लिए उठा लेना चाहते थे। बच्चों के स्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, दूध की डेरी और जानवरों के अस्पताल आदि खुल गए थे। सिर्फ पनासी ही नहीं बल्कि आस-पास के गांवों में भी बदलाव आ गया था। राजेश्वर इन गांवों का दौरा करने के लिए आने वाला था। जोर-शोर से तैयारियां हो रही थीं। सरकारी अफसरों के पड़ाव पड़े हुए थे, तो तोरण द्वारों से सारे गांवों को सजाया जा रहा था। आस-पास के गांवों में थोड़ा-थोड़ा समय देकर एक दिन अपने घर पर भी रहने का राजेश्वर का कार्यक्रम था। न केवल रघुनन्दन बल्कि पूरा गांव और आस-पास के लोगों

के लोग भी रघुनन्दन के घर को मिनिस्टर के रहने लायक बना रहे थे। ऐसा लग रहा था कि, जैसे राजेश्वर की ही अब शादी होने जा रही है।

ठाकुर रघुनन्दन सिंह और जोखा सिंह अपनी पुरानी राजपूती पोशाक निकाल कर, उसे ठीक-ठाक कर रहे थे। मुकुन्दी जरूर इन कार्यों से अलग थे। बाबा प्रेमचन्द का स्थान भी खूब सजाया गया था। राजेश्वर अपनी पत्नी– सपना के साथ गांव के प्रमुख द्वार पर जैसे ही आया वैसे ही

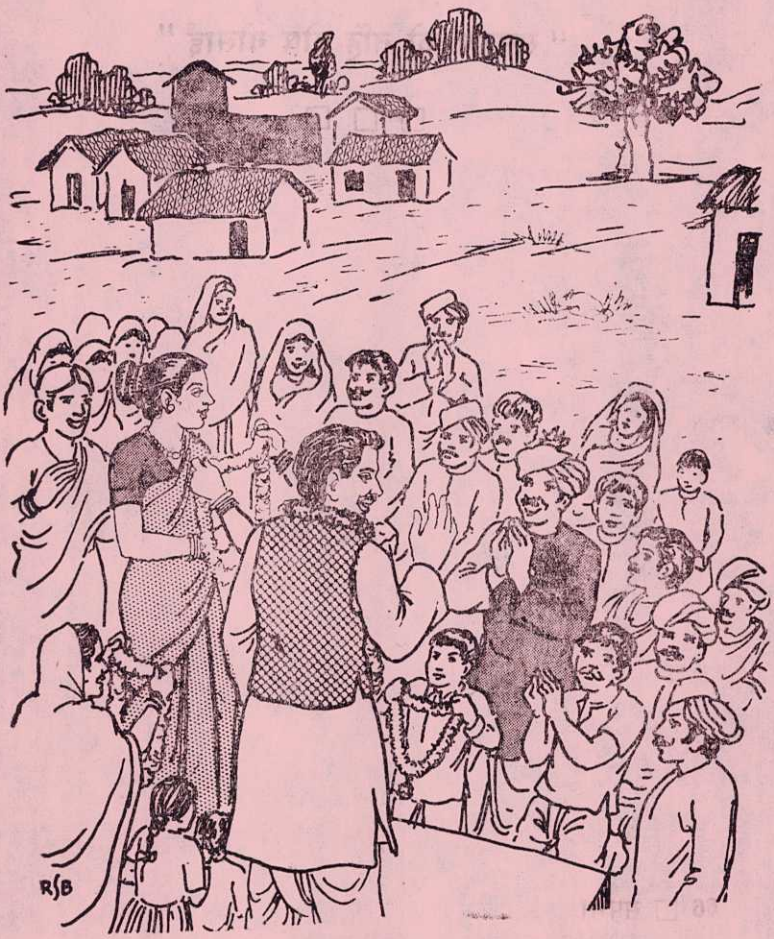

उसकी तथा सपना की ऐसी आवभगत की गई जैसे ब्याह के बाद वर-वधू अपने घर लौटते हैं। आरती उतारी गई। तिलक लगाए गए। दोनों को फूल-मालाओं से लाद दिया गया। बाबा प्रेमचन्द भी राजेश्वर और सपना का स्वागत करने आए थे। उन्होंने जयघोष किया कि "नया सवेरा हो गया।" चारों ओर खुशी झलक रही थी। ऊंच-नीच के भेद-भाव मिट चुके थे। मुकुन्दी जी अपने घर पर ही रहे और उन्होंने लोगों से केवल इतना ही कहा—

"समरथ को नहिं दोष गोसाईं"

□ □ □

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002